दैनिक पंचांग
सूर्योदयः 05:27 ए एम
सूर्यास्तः 07:09 पी एम
तिथिः चतुर्थी - 12:57 ए एम, मई 24 तक
नक्षत्रः आर्द्रा - 12:39 पी एम तक
योगः शूल - 04:47 पी एम तक
करणः वणिज - 12:04 पी एम तक
द्वितीय करणः विष्टि - 12:57 ए एम, मई 24 तक
पक्षः शुक्ल पक्ष
वारः रविवार

हिन्दी दैनिक

झारखण्ड देखो

खबरें, कहानी, लोग और बहुत कुछ

Digital Edition

www.jharkhanddekho.com • वर्ष 03 • अंक 336 • पृष्ठ 8 • दुमका, रविवार 10 दिसंबर 2023 • मूल्य 2 रुपये Email - Jharkhanddekho@gmail.com | epaper - Jharkhanddekho.com

संक्षिप्त समाचार

एमपी, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री पर कब खत्म होगा सस्पेंस? सामने आई बड़ी जानकारी

नई दिल्ली। राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ समेत पांच राज्यों में हाल में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव के नतीजे आए कई दिन बीत चुके हैं। हालांकि भारतीय जनता पार्टी ने अब तक मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री के चेहरे का ऐलान नहीं किया है। पांच में से तीन राज्यों में बीजेपी और तेलंगाना में कांग्रेस को जीत मिली थी। तेलंगाना में तो कांग्रेस ने सरकार का गठन भी कर लिया है। कांग्रेस नेता रेवंत रेड्डी ने गुरुवार को तेलंगाना के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। इन सबके बीच मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर बड़ी खबर सामने आ रही है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री पद का चुनाव विधायक दल की सोमवार (11 दिसंबर) को होने वाली बैठक में होगा। वहीं, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में रविवार (10 दिसंबर) को विधायक दल की बैठक होनी है और इसी दिन मुख्यमंत्री के चेहरे का ऐलान किया जा सकता है। सूत्रों के अनुसार, क्ष्छ्वक्क के केंद्रीय पर्यवेक्षक अर्जुन मुंडा, सर्बानंद सोनोवाल और दुष्यंत गौतम विधायक दल की बैठक आयोजित करने के लिए 10 दिसंबर को छत्तीसगढ़ का दौरा करेंगे। वहीं, सरकार गठन के लिए मध्यप्रदेश बीजेपी विधायक दल की बैठक 11 दिसंबर को होगी।

कैमरे में कैद हुआ मोबाइल टावर गिरने का लाईव वीडियो, बाल-बाल बचे 11 लोग

बेंगलुरु । बेंगलुरु में तोडफोड़ अभियान के दौरान एक इमारत के ऊपर लगा मोबाइल टावर ढह गया। स्थानीय लोगों द्वारा रिकॉर्ड किए गए वीडियो में टावर गिरने से पहले एक तरफ झुकता हुआ दिख रहा है। इस घटना में किसी को चोट नहीं आई। वीडियो क्लिप में दिखाया गया है कि शहर के पार्वतीनगर उपनगर में एक इमारत के ऊपर स्थित टावर झुकना शुरू कर देता है, जबकि पास में एक और घर को ध्वस्त किया जा रहा था।
गनीमत है कि किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है। बगल में खाली पड़े प्लॉट पर मकान बनाने के लिए मालिक नींव हटाने की तैयारी कर रहा था। जिसके तहत में जेसीबी से साइट को साफ करने का काम किया जा रहा था, तभी यह घटना घट गई।
घटनास्थल के बगल वाले मकान पर एयरटेल कंपनी का मोबाइल टावर लगा हुआ था। अधिकारियों ने बताया कि जब जेसीबी से मिट्टी हटाई जा रही थी तो टावर हाउस और उसके ऊपर लगा लोहे का टावर अचानक ढह गया।
मोबाइल टावर से सटी दो मंजिला इमारत में 11 लोग रह रहे थे। टावर गिरने का अंदेशा होने पर घर के अंदर मौजूद सभी लोगों को बाहर निकाला गया। इसलिए सौभाग्य से 11 लोग खतरे से बच गए। मोबाइल टावर के गिरने से बगल की 2 दुकानें क्षतिग्रस्त हो गईं। बीबीएमपी अधिकारी और पुलिस ने मौके पर जाकर निरीक्षण किया। बीबीएमपी अधिकारियों ने लापरवाही का आरोप लगाते हुए साइट के मालिक हरीश के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के लाभार्थियों से पीएम मोदी बोले

'करोड़ों परिवारों को हमारी योजनाओं का मिल रहा लाभ'

नई दिल्ली/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के लाभार्थियों से बातचीत की. इस अवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि 'मोदी की गारंटी' वाली गाड़ी को लेकर जो उत्साह गांव-गांव में दिख रहा है, हिंदुस्तान के कोने-कोने में दिख रहा है, चाहे उत्तर हो, दक्षिण हो, पूरब हो, पश्चिम हो... बहुत ही छोटा गांव या बड़ा गांव हो, लोग गाड़ी को खड़ी करके सारी जानकारियां लेते हैं. ये अपने आप में अद्भुत है.
केंद्र की योजनाओं का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा, ₹देश भर के गांवों में करोड़ों परिवारों को हमारी सरकार की किसी न किसी योजना का जरूर लाभ मिला है... और जब ये लाभ मिलता है, तो एक विश्वास बढ़ता है. जिंदगी जीने की एक नई ताकत आ जाती है. पहले जो भीख मांगने की मनःस्थिति रहती थी, अब वो चली गई है. सरकार ने लाभार्थियों की पहचान की और फिर उन तक लाभ पहुंचाने की कदम उठाए. तब ही आज लोग कहते हैं- मोदी की गारंटी यानी, गारंटी पूरी होने की गारंटी
पीएम मोदी ने कहा, 'विकसित भारत संकल्प यात्रा ऐसे लोगों तक पहुंचने

का बहुत बड़ा माध्यम बनी है, जो अब तक सरकार की योजनाओं से नहीं जुड़ पाए. यह बहुत बड़ी बात है कि इतने कम समय में अब तक सवा करोड़ से अधिक लोग मोदी की गारंटी वाली गाड़ी तक पहुंचे हैं और उसका स्वागत किया है, उससे जुड़ने की कोशिश की है और उसे सफल बनाने का काम किया है. सरकार की लगातार कोशिश है कि जब मोदी की गारंटी वाली गाड़ा पहुंचे, तो गांव का हर एक व्यक्ति उस गाड़ी तक जरूर पहुंचना चाहिए, तब ही हम हर लाभार्थी तक पहुंच पाएंगे, क्योंकि हमें देश को आगे बढ़ाना है. मोदी की गारंटी वाली गाड़ी पहुंचने के बाद लगभग एक लाभ नए लाभार्थियों ने उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त गैस कनेक्शन के लिए आवेदन किया है. इस यात्रा के दौरान मौके पर ही 35 लाख से अधिक आयुष्मान कार्ड भी दिए गए हैं. मेरे परिवारजन तक पहुंचने का आपके सेवक का यह प्रयास है. मैं आपके गांव तक आ रहा हूं, गाड़ी के माध्यम से आ रहा हूं. इसलिए कि आपके सुख-दुख का साथी बनूं, आपके आशा-आकांक्षाओं को समझूं. उसको पूरा करने के लिए सरकार की पूरी शक्ति लगाऊं.
कांग्रेस का नाम लिये बिना तंज कसते हुए पीएम मोदी ने कहा कि अगर विपक्षी दलों ने राजनीति स्वार्थ के बजाये सेवाभाव को सर्वोपरि रखा होता, सेवाभाव को ही अपना काम समझा होता, तो देश की बहुत बड़ी आबादी अभाव में, मुसीबतों में, तकलीफों न रहती.
आपने पाई-पाई बचाई भी, गरीब की भलाई करके दिखाई भी- अनुराग ठाकुर केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने इस अवसर पर कहा, जन-जन तक योजनाओं को पहुंचाने वाले... ऐसे प्रधानमंत्री जो जनता को अपना परिवारजन मानते हैं, ऐसे प्रधान सेवक और दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता नरेंद्र मोदी जी का आप सभी की ओर से हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करता हूं. माननीय प्रधानमंत्री जी आपने जब शपथ ली थी, तो कहा था कि आपकी सरकार, गरीबों, वंचितों और शोषितों की होगी... महिलाओं, मजदूरों और किसानों की होगी. पिछले साढ़े नौ वर्ष दिखाते हैं कि आपके प्रयासों ने देश में एक नया बदलाव आया है.
उन्होंने कहा, एक समय देश में सिर्फ 'गरीबी हटाओ' का नारा ही सुनाई देता था. लेकिन आपने गरीबों और अमीरों के बीच की खाई को कम करने का प्रयास किया है.

पीएम मोदी ने सोनिया गांधी को उनके जन्मदिन पर दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी को उनके जन्मदिन पर बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनकी लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य की कामना की है। प्रधानमंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, श्रीमती सोनिया गांधी को उनके जन्मदिन की शुभकामनाएं। उन्हें लंबे और स्वस्थ जीवन का आशीर्वाद मिले। सोनिया गांधी का जन्म 9 दिसंबर 1946 को इटली में हुआ था। वह लंबे समय तक कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहीं। इस दौरान 2004 और 2009 के लोक सभा चुनावों में लगातार दो बार कांग्रेस को सत्ता तक पहुंचाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। 2019 के लोक सभा चुनाव में उत्तर प्रदेश के रायबरेली से चुनाव जीती सोनिया गांधी ने पिछले कुछ वर्षों से स्वास्थ्य कारणों के चलते सक्रिय राजनीति से दूरी बना ली थी, लेकिन विगत कुछ महीनों से एक बार फिर से राजनीति में सक्रिय हो गई हैं। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा को लोक सभा की संसद सदस्यता से निष्कासित करने के मसले पर शुक्रवार को सोनिया गांधी सदन के अंदर और बाहर सरकार का विरोध कर रहे विपक्षी दलों का सक्रिय नेतृत्व करती नजर आईं।

आईएसआईएस आतंकी साजिश मामले में एनआईए की बड़ी कार्रवाई

देशभर में 41 ठिकानों पर की छापेमारी

नई दिल्ली/एजेंसी।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी की टीमों ने इस्लामिक स्टेट आतंकी साजिश मामले में शनिवार को महाराष्ट्र और कर्नाटक में 44 स्थानों पर छापेमारी की। कर्नाटक में कुछ स्थानों पर छापे चल रहे है, जबकि महाराष्ट्र में पुणे, ठाणे ग्रामीण, ठाणे शहर और मीरा भयंदर में भी छापेमारी जारी है।
हद्दद्व के अधिकारियों के मुताबिक, यह मामला आरोपी व्यक्तियों और उनके सहयोगियों द्वारा रची गई एक आपराधिक साजिश से संबंधित है, जिन्होंने अल-कायदा और आईएसआईएस सहित प्रतिबंधित

आतंकवादी संगठनों की हिंसक चरमपंथी विचारधारा के साथ एक आतंकवादी गिरोह बनाया था।
राष्ट्रीय जांच एजेंसी के सूत्रों ने कहा कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन और चल रहे मामले में विदेशी स्थित आईएसआईएस संचालकों की भागीदारी के साथ एक बड़ी साजिश का खुलासा किया है। जांच में भारत के भीतर आईएसआईएस की चरमपंथी विचारधारा का प्रचार करने वाले आरोपियों के एक जटिल नेटवर्क का खुलासा हुआ है।

लालू परिवार ने तिरुपति बालाजी के दर्शन किए, तेजस्वी ने बेटी का मुंडन कराया

पटना/एजेंसी। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने अपने पूरे परिवार के साथ तिरुपति बालाजी के दर्शन किए। इसके बाद तेजस्वी यादव की पुत्री कात्यायनी का मुंडन भी कराया गया। बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने इसकी तस्वीर भी अपने एक्स हैंडल से पोस्ट की है। उसमें लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी, तेजस्वी यादव, तेज प्रताप यादव, राजश्री और साथ में तेजस्वी की बेटी कात्यायनी भी दिख रही है। तेजस्वी और तेजप्रताप भी मुंडन कराए दिख रहे हैं। तेजस्वी ने अपने अधिकारिक एक्स हैंडल से तस्वीरें पोस्ट करते हुए लिखा, आज सवेरे आंध्र प्रदेश के तिरुमाला पर्वत स्थित उत्कृष्ट शिल्प कौशल के अद्भुत उदाहरण एवं भक्ति, विश्वास और श्रद्धा के प्रतीक भगवान श्री तिरुपति बालाजी मंदिर में सपरिवार पूजा-अर्चना व दिव्य दर्शन कर सकारात्मक ऊर्जा एवं आशीर्वाद प्राप्त किया तथा गर्भगृह में विराजमान भगवान वेंकटेश्वर से समस्त प्रदेशवासियों के सुख, शांति, समृद्धि और कल्याण के लिए मंगल प्रार्थना की।
उन्होंने आगे लिखा, आज शादी की सालगिरह के विशेष दिन पर बेटी कात्यायनी का मुंडन संस्कार भी संपन्न हुआ। सकारात्मक ऊर्जा उत्सर्जित करने वाले पौराणिक ऐतिहासिक व आध्यात्मिक स्थलों की यात्रा ज्ञानार्जन, शुभता, दिव्य हस्तक्षेप, आध्यात्मिक सांत्वना, आत्म-साक्षात्कार, ध्यान और परमात्मा से जुड़ने का जरिया, व्यक्तिगत व सामुदायिक विकास तथा मानव जीवन के मूल उद्देश्य की गहराई को समझने की चाह रखने वालों के लिए एक मार्गदर्शन के रूप में भी कार्य करती है।

तेलंगाना में विभागों का बंटवारा, डिप्टी सीएम को वित्त विभाग; श्रीधर बाबू होंगे सूचना प्रौद्योगिकी और उद्योग मंत्री

हैदराबाद/एजेंसी। तेलंगाना के उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क को वित्त विभाग दिया गया है, जबकि डुडिला श्रीधर बाबू सूचना प्रौद्योगिकी और उद्योग मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभालेंगे। तेलंगाना में कांग्रेस सरकार के गठन के दो दिन बाद मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने शनिवार को मंत्रियों के बीच विभागों का वितरण किया। मुख्यमंत्री ने नगरपालिका प्रशासन और शहरी विकास, सामान्य प्रशासन और कानून व्यवस्था अपने पास रखी है।
वह अन्य सभी अनावंटित विभागों की भी जिम्मेदारी संभालेंगे। उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क वित्त एवं योजना और ऊर्जा का कार्यभार देखेंगे। श्रीधर बाबू सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार, उद्योग और वाणिज्य के मंत्री होंगे। वह विधायी कार्य भी देखेंगे।
नालामाडा उत्तम कुमार रेड्डी को सिंचाई और सीएडी, खाद्य और नागरिक आपूर्ति दिया गया है। सी. दामोदर राजनरसिम्हा स्वास्थ्य, चिकित्सा और परिवार कल्याण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री होंगे। कोमाटिरेड्डी वेंकट रेड्डी सड×क और भवन, सिनेमैटोग्राफी संभालेंगे और पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी राजस्व और आवास तथा सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री होंगे। पोन्नम प्रभाकर परिवहन और बीसी कल्याण विभाग संभालेंगे। कोंडा सुरेखा पर्यावरण एवं वन और बंदोबस्ती की मंत्री होंगी। सीताक्का पंचायत राज और ग्रामीण विकास (ग्रामीण जल आपूर्ति सहित), महिला और बाल कल्याण मंत्री हैं। तुम्मला नागेश्वर राव को कृषि, विपणन, सहयोग और हथकरघा एवं कपड़ा विभाग आवंटित किया गया है जबकि जुपल्ली कृष्णा राव निषेध और उत्पाद शुल्क, पर्यटन और संस्कृति एवं पुरातत्व मंत्री होंगे।

राजस्थान में सरकार बनाने से पहले ही एक्शन मोड में बीजेपी, अशोक गहलोत के सबसे खास अधिकारी एसीबी की रडार पर

जयपुर/एजेंसी। हाल ही में पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में से तीन राज्यों में भारतीय जनता पार्टी ने बहुमत हासिल किया है। तीनों राज्यों में अभी तक भाजपा ने सीएम के नाम की घोषणा नहीं की है। राजस्थान में सरकार बनने से पहले ही भाजपा एक्शन मूड में आ गई है। सूत्रों के अनुसार राजस्थान के पूर्व सीएम अशोक गहलोत के सबसे ख़ास अधिकारी अखिल अरोड़ा अब एंटी करप्शन ब्यूरो की रडार पर आ गए हैं। एंटी करप्शन ब्यूरो सीनियर आईएएस अफसर अरोड़ा से योजना भवन में मिले कैश और गोल्ड मामले में पूछताछ कर सकती है। इसके लिए एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने अनुमति भी मांगी है।
गौर हो कि विधानसभा चुनाव 2023 में बीजेपी ने बहुमत हासिल किया है। राज्य में सरकार बनने का रास्ता साफ है। हालांकि वो अब तक मुख्यमंत्री का चयन नहीं कर पाई है। पार्टी में कई नामों को लेकर मंथन चल रहा है। सीएम के नाम पर चर्चा के बीच ही बीजेपी ने गहलोत के खास अधिकारी को निशाने पर ले लिया है।

आतंकी हमले में पुलिस इंस्पेक्टर शहीद, अंतिम संस्कार में उमड़ा लोगों का हूजूम

श्रीनगर/एजेंसी। जम्मू-कश्मीर पुलिस इंस्पेक्टर के अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। आतंकी हमले में पुलिस इंस्पेक्टर गंभीर रूप से घायल हो गए थे। एक महीने से अधिक समय से जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहे इंस्पेक्टर की इलाज के दौरान मौत हो गई। विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग इंस्पेक्टर मसरूर अहमद वानी के अंतिम संस्कार में शामिल हुए। उनकी दिल्ली के एम्स में इलाज के दौरान मौत हो गई।
मसरूर अहमद वानी का शव घर लाया गया। इसके के बाद श्रीनगर में जिला पुलिस लाइन में पुष्पांजलि समारोह आयोजित किया गया। पुष्पांजलि समारोह में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और शहीद पुलिस अधिकारी के परिवार के सदस्य शामिल हुए। बाद में शव को श्रीनगर शहर के नरवारी इलाके में उनके घर ले जाया गया। इसके बाद उन्हें सुपुर्द-ए-खाक किया गया। वानी पर 29 अक्टूबर को श्रीनगर के ईदगाह इलाके में आतंकवादियों ने उस समय हमला किया था

Dipendra Singh
9335448671

R.K. Choudhary
8384831556

RK marbles & tiles

मार्बल & ग्रेनाइट

राजस्थान वाले

रेलवे स्टेशन के सामने, रिंग रोड, दुमका (झारखंड)

संक्षिप्त समाचार

ग्राम समिति के सदस्यों ने गांव के 194 परिवार के बीच किया मछली वितरण

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। शनिवार को महिषबाथान ग्राम समिति के सदस्यों ने गांव के 194 परिवार के बीच मछली वितरण किया।ज्ञात हो कि ग्राम समिति के सदस्यों ने गांव के दियर पोखर में मछली पालन किया हैं।यह सरकारी तालाब हैं।समिति के सदस्यों भवानी प्रसाद मंडल,मृणाल कांति मंडल , रजत कांति गोराई,मारुति नंदन मंडल,तापस दास,नीरज कुनूई,सांत दलुई ,कार्तिक मंडल ,मानव मंडल, निरंजन मंडल ,अर्जुन रामदास,मनोज बाउरी,जगबंधु मंडल,परितोष मंडल ,बिश्वनाथ कुनूई,बिनोद राय ,निराश चक्रवर्ती,बिभू चक्रबर्ती,भास्कर चक्रबर्ती ,पिंटू कुनूई ,टोटन मंडल, उत्तम मंडल एवं लालन मंडल मिठुन मंडल ने मत्स्य विभाग से तालाब का सैरात बंदोबस्त लेकर मत्स्य पालन शुरू किया हैं। सालाना 7651 रुपये की दर से तीन साल के लिए सैरात लिया हैं।शनिवार को यहां सादीपुर गांव के मत्स्य पालक मनसा केवट के माध्यम से 140 किलो मछली पकड़कर ग्रामीणों में बितरण किया।

हंसडीहा थाना क्षेत्र से एक ठग को गिरफ्तार कर भेजा जेल

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। रानीश्वर पुलिस ने लगातार तीन महीने के अनुसंधान के बाद शनिवार के अहल सुबह हंसडीहा थाना के चापा तोरी गांव से एक ठग को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। बताते चलें कि सितंबर महीने में रानीश्वर थाना क्षेत्र के आमजोड़ा गांव में एक महिला को सोने का जेवर साफ करने की बात कह कर दो कथित स्वर्ण आभूषण कारोबारी ने जेवर उड़ा लिया था।स्थानीय पुलिस ने उसी समय एक अपराधी को गिरफ्तार कर लिया था।जब कि अन्य आरोपी सुशील साह भागने सफल हो गया था।जिसे शनिवार को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

राज्य सरकार की सराहनीय पहल

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। जामा प्रखंड के भैरवपुर पंचायत में आयोजित आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम के शिविर में भैरवपुर पंचायत के ग्राम

बरमसिया के रहने वाले साधु राय को सर्वजन पेंशन योजना अंतर्गत स्वीकृति पत्र प्रदान किया गया। साधु राय कहते हैं कि इस तरह का कार्य राज्य सरकार की सराहनीय पहल है। जिससे हम ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रखंड मुख्यालय का चक्कर नहीं लगाना पड़ रहा है। और बिचौलियों से भी निजात मिली है। पंचायत स्तर पर ही शिविर लग जाने से हमलोगों को सरलता पूर्वक योजनाओं का लाभ मिल रहा है। इसके लिए मैं जिला प्रशासन एवं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को दिल से आभार व्यक्त करता हूं।

अज्ञात वाहन के चपेट में आने से मोटर साईकिल सवार घायल

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। हंसडीहा थाना क्षेत्र अंतर्गत दुमका भागलपुर मुख्य मार्ग पर चंद्रदीप गांव स्थित पेट्रोप पंप के समीप शनिवार को अज्ञात वाहन के चपेट में आने से मोटर साईकिल सवार एक व्यक्ति गम्भीर रूप में घायल हो गया।घटना की सूचना मिलते ही हंसडीहा थाना की पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और घायल व्यक्ति को ईलाज की लिए सामूदायिक स्वास्थ्य केंद्र सरैयाहाट भेजा।घटना के बाद हंसडीहा पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है।सामाचार लिखे जाने तक घायल की पहचान नहीं हो पाई थी।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 9694 वादों का निष्पादन के साथ 32 करोड़ से अधिक की राशि का किया गया समझौता

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार, नालसा, नई दिल्ली व झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, झालसा, रांची के निर्देश के आलोक में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, दुमका के तत्वाधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, दुमका, विश्वनाथ भगत से प्राप्त सूचना अनुसार राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल आठ बेंचों का गठन किया गया है। बेंच नंबर 1 से संजय कुमार सिंह, प्रधान न्यायाधीश, कुटुंब न्यायालय, दुमका, ऋ त्विका सिंह, वरीय अवर न्यायाधीश-द्वितीय, दुमका एवं रूपक आचार्य, अधिवक्ता, दुमका उपस्थित हुए। बेंच नंबर 2

से रमेश चंद्र, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश- प्रथम, दुमका, सरोज कुमार गोन, अधिवक्ता, दुमका एवं अमरेश कुमार कन्हैयाजी, अधिवक्ता उपस्थित हुए। बेंच नंबर 3 से लक्ष्मण प्रसाद, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश- तृतीय, दुमका, शैलेंद्र कुमार नापित, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी, दुमका एवं ओमीयो कुमार मांझी, अधिवक्ता, दुमका उपस्थित हुए। बेंच नंबर 4 से विजय कुमार यादव, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी, दुमका, सिकंदर मंडल, एल. ए. डी. सी. दुमका एवं राकेश चंद्र लाल मरांडी, अधिवक्ता, दुमका उपस्थित हुए। बेंच नंबर 5 से उत्तम सागर राणा, वरीय अवर न्यायाधीश-चतुर्थ, दुमका, जितेंद्र राम, अनुमंडलीय न्यायिक दंडाधिकारी, दुमका एवं नीरज कुमार दीक्षित, अधिवक्ता, दुमका उपस्थित हुए। बेंच नंबर 6 से सार्थक शर्मा, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी, दुमका, मो० शमशाद अंसारी, अधिवक्ता, एवं हिमांशु शेखर पाठक, अधिवक्ता, दुमका उपस्थित हुए। बेंच नंबर 7 से अर्पणा कुमारी, वरीय अवर न्यायाधीश-पंचम, दुमका, विनीत कुमार, कार्यपालक दंडाधिकारी, दुमका एवं नित्यानंद यादव, अधिवक्ता उपस्थित हुए। बेंच नंबर 8 से सुरेश चंद्र जायसवाल, अध्यक्ष, जिला उपभोक्ता फोरम, दुमका, नीलमणि मराण्डी, सदस्य, जिला उपभोक्ता फोरम, दुमका एवं चंदन बनर्जी, सदस्य, जिला उपभोक्ता फोरम, दुमका उपस्थित हुए। आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत मे मुख्य रूप से परिवारिक वाद, दुर्घटना वाद, लैंड एक्विजिशन, एम ए सी टी, सिविल अपील, क्रिमिनल अपील, बैंक रिकवरी, लीगल मेट्रोलॉजी एक्ट, क्रिमिनल केस, माइनिंग केस, प्री लिटिगेशन मैटर, पुलिस एक्ट, माइनर एक्ट, एक्सक्यूटिव केस, सर्टिफिकेट केसेस, कंज्यूमर फोरम केसेस आदि शामिल है। इस प्रकार कुल आठ बेंचों से 9694 वादों का समझौते के आधार पर निष्पादन करते हुए कुल झ 32,47,05,729/- रुपए की राशि का समझौता किया गया ।

भ्रष्टाचार का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव विषय पर विभागीय सेमिनार आयोजित

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय दुमका के स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग में ' अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार निषेध दिवस' के अवसर पर विभागाध्यक्ष सह मेंटल हेल्थ मिशन इंडिया के नोडल ऑफिसर डॉ विनोद कुमार शर्मा की अध्यक्षता में ' भ्रष्टाचार का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव ₹ विषय पर विभागीय सेमिनार आयोजित किया गया । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ विनोद कुमार शर्मा ने कहा कि समाज में नैतिकता का पतन व गिरते सामाजिक मानकों का परिणाम हैं भ्रष्टाचार । भ्रष्टाचार भ्रष्ट आचरणों का प्रतिफल हैं ।ये मनोविकारी इड की अभिलाषा हैं ।यह गलत तरीके से धन अर्जन करने की पाश्विक प्रवृत्तियां हैं जो मानवता से दूर स्वार्थी बनाता हैं। उमसें नैसर्गिक इच्छाओं की पूर्ति को प्रेरित करता हैं । यह मनोग्रस्त रोग हैं। एक दोषपूर्ण व्यवहारिक अनुशरण हैं जहाँ हीनता के क्षतिपूर्ति में शॉर्ट

कट कमाई की सोचते हैं । साइबर क्राइम, लूट, दलाली, छीनतई आदि से लेकर अपहरण आदि को अंजाम देते हैं। यह भ्रष्टाचार की देन है कि समाज में न केवल कुव्यवस्था व आर्थिक विषमता का वातावरण निर्मित होता हैं व समाज विरोधी भावना जागृत होता हैं बल्कि इसके दुष्प्रभाव से समाज में अपराध भावना भी बबलती हैं । लोगों में इस बात की चिंता घर करती हैं कि बिना घूस दिये न तो कोई काम समय पर बनेगा और न बच्चों को अच्छी शिक्षा व नौकरी मिलेगा। युवा तब आत्महत्या करने को मजबूर होते हैं जब धन लोलुप मानसिकता के हाथों उसकी योग्यता की कद्र नही होती हैं। दुर्भाग्य है भ्रष्टाचार से अछूते स्कूल, देवालय तक नही हैं । घपले, घोटाले, धोखाधरी, काला बाजारी, कमीशन खोरी, आदि भ्रष्ट व्यवहार से शोषण, विफलता, आदि का शिकार होते है बल्कि टिकाऊ भविष्य की संकल्पना पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा करता हैं। डॉ शर्मा ने बच्चों में चरित्र निर्माण के साथ- साथ नैतिक आचरणों को विकसित करने की बात दोहराई तो वही लोगो को दूसरों की भावनाओं को केंद्र में रख देश हित में व्यवहार करने को कहा । मौके पर विद्यार्थियों ने कहा कि हर योजना के पीछे भ्रष्टाचार होता हैं जिसका परिणाम है सड़क, पुल, डोभा सब बेकार साबित होते हैं ।

सरकार आपके द्वार शिविर में आबुआ आवास के लिए दिए गए 910 आवेदन

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। आपकी योजना,आपकी सरकार,आपके द्वार कार्यक्रम के तीसरे चरण में राज्यव्यापी अभियान के तहत शनिवार को रामगढ़ प्र-खंड के बंदरजोरा में जनता दरबार का आयोजन किया गया।जनता दरबार का उद्घाटन जिला परिषद उपाध्यक्ष सुधीर मंडल,प्रखंड प्रमुख बाबूलाल मुर्मू,बीडीओ अभय कुमार तथा बंदरजोरा पंचायत की मुखिया प्यारी मुर्मू ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया।अन्य पंचायतों की तरह बंदरजोरा में भी सर्वाधिक आवेदन आबुआ आवास योजना के लिए दिए गए।शिविर समन्वयक सह प्रभारी प्रखंड कृषि पदाधिकारी आशीष रंजन के अनुसार ग्रामीणों ने आबुआ आवास योजना के लिये 910 आवेदन दिए।इसके अलावा आयुष्मान कार्ड के लिये 65,बिरसा सिंचाई संवर्धन योजना के तहत सिंचाई कूप के लिये 14,जाति प्रमाण पत्र के लिये 04,दिव्यांग पेंशन के लिये 02,मुख्यमंत्री पशुधन योजना के

लिये 78,सर्वजन पेंशन योजना के लिये 22,सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के लिये 06, राशन कार्ड के लिये 05,विद्युत विभाग के लिये 02 तथा किसान क्रेडिट कार्ड के लिये 05 आवेदन दिये गए. वहीं शिविर में 05 श्रमिक परिवारों को मनरेगा जॉब कार्ड,पांच व्यक्तियों को कंबल,14 व्यक्तियों को मनरेगा सिंचाई कूप,पांच व्यक्तियों को सोना-सोबरन धोती साड़ी योजना का लाभ दिया गया।जबकि दो महिलाओं को विधवा सम्मान पेंशन,पांच व्यक्तियों को वृद्धावस्था पेंशन,तीन व्यक्तियों को आयुष्मान कार्ड, छः बालिकाओं को सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ दिया गया.वहीं उत्क्रमित उच्च विद्यालय, बंदरजोरा की आठ छात्र-छात्राओं को साइकिल,पांच को जाति प्रमाण पत्र तथा छः को स्कूल ड्रेस दिया गया।शिविर में कृषि शिक्षा,समेकित महिला एवं बाल विकासपरियोजना ।,राजस्व,मनरेगा,आदि विभागों के प्रखंड स्तरीय अधिकारी तथा सभी पंचायत सचिव,ग्राम रोजगार सेवक आदि उपस्थित थे।

आगामी 12 दिसंबर को गादी कोरिया में संभावित मुख्यमंत्री के कार्यक्रम को लेकर बैठक आयोजित

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। आगामी 12 दिसंबर को गादी कोरिया में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के संभावित कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु शनिवार को प्र-खंड सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न गांवों से जेएसएलपीएस के महिला सदस्यों की उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु विचार विमर्श किया गया । प्र-

खंड विकास पदाधिकारी शिबाजी भगत एवं अंचल अधिकारी कयूम अंसारी के अध्यक्षता में हुई बैठक में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी नदिया नंद मंडल,बाल विकास परियोजना पदाधिकारी रंजना कुमारी,डा आजाद शेखर पंडित,सुपरवाइजर बुलू घोष,जनसेवक सह गोदाम प्रबंधक बिश्वनाथ सिंह मौजूद थे। अवसर पर मनरेगा के रोजगार सेवक एवं महिला समूह के सदस्यों के साथ बैठक कर गादी कोरिया के कार्यक्रम में अधिक से अधिक महिलाओं की उपस्थिति सुनिश्चित हेतु कई आवशयक सुझाव दिए गए।

M/s टेन्ट हाउस, लाइट्स एण्ड डेकोरेटर्स

यहाँ सभी तरह के पंडाल से सम्बंधित, गद्दा, दरी, कम्बल, टेबुल, कुर्सी, बर्तन, काफी मशीन V.I.P कुर्सी, सोफा कारपेट, इत्यादी उचित दर पर भाड़े पर मिलता है।

नोट : फूलो से सभी तरह की सजावट-गाड़ी, मंडप, वरमाला, स्टेज (All Event) सजावट एवं लाईट डेकोरेशन भी की जाती है।

प्रो. उत्तम कुमार भगत
मो:- 8541927723, 6204010027

पता: शिव पहाड़, मंदिर रोड, दुमका, एवं रिंग रोड (हाईवे) R.K. मार्बल बिल्डिंग, दुमका।

कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी का जन्मदिन धूमधाम से मनाया

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। जिला कांग्रेस कार्यालय दुमका में जिलाध्यक्ष महेश राम चंद्रवंशी के नेतृत्व में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया।इस अवसर पर कांग्रेसियों ने केक काटा और गरीबों के बीच कंबल वितरण किया। त्याग और साहस की प्रतिमूर्ति सोनिया गांधी के जन्म दिवस पर कांग्रेसियों ने विचार को साझा करते हुए कहा कि सोनिया गांधी ने कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष

रहते हुए कभी भी सत्ता का लोभ नहीं किया।जब 2004 में कांग्रेस बहुमत हासिल कर चुकी थी और पार्टी के सारे सांसद सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनने के लिए उतावले हो रहे थे,उस समय भी सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री की कुर्सी को त्याग दिया था।दुमका जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष महेश राम चंद्रवंशी ने कहा कि एक महिला वह देखा था जिसने पाकिस्तान के टुकड़े कर सीने में फौलाद का दिल रख कर पूरे विश्व में अपना लोहा मनवाया था,और दूसरी महिला यह देखा जिन्होंने प्रधानमंत्री की कुर्सी का त्याग किया था। वास्तव में हमारी नेतृत्वकर्ता सोनिया गांधी के जन्मदिन पर हम उनके उनके स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। कार्यक्रम में झारखंड प्रदेश कांग्रेस की सचिव अरबी खातून,ज़िला उपाध्यक्ष प्रेम साह,संजीत सिंह,शहरोज़ शेख,टिंकू अली इमाम,सत्यनारायण यादव, मार्था हांसदा,ममता देवी,सागेन मुर्मू, स्टीफन मरांडी,विलियम टुडू,रोमी इमाम,मजीद अंसारी,सुबोध मंडल, सुनील किस्कू,अमित झा,विवेक मंडल,संतोष सिंह, दशरथ मंडल, मिट्ठू यादव,सुज्जल सेन,मो. अब्दुल राजा आदि उपस्थित थे।

Govt. Regd.

B.ED.
B.P.ED.
D.ED.
D.PHARMA
LLB

A to Z CONSULTANCY
Contact for Fast Track Mode
Session Available: 2020 onWards.
GRADUATION/MASTERS/PH.D all courses
Regular and Distance Mode
Contact: 9955599136, 9234964298 , 7870104955

GNM
B.Sc. NURSING
PARA MEDICAL
B.TECH / DIPLOMA
MBA / BBA

Address: Ring Road, Near R.K. Marble. Dumka, Jharkhand.

कांग्रेस के भ्रष्ट नेताओं के कारनामे को शीतकालीन सत्र में उठाएगी भाजपा: अनंत ओझा

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

पाकुड़। कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों पर हुई छापेमारी में जब 300 करोड रुपए मामले पर राजमहल विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक अनंत ओझा ने कहा कि 22 दिसंबर से शीतकालीन सत्र में कांग्रेस के भ्रष्टाचारियों नेताओं का मामला सदन में पुरजोर तरीके से उठाई जाएगी। विधायक अनंत ओझा शनिवार को पाकुड़ भाजपा कार्यालय में प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर उक्त बातें कहीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और गठबंधन की सरकार झारखंड में साहिबगंज और पाकुड़ मैं जिस प्रकार खनिज संपदा का रूट का सूट किया है उसे पूरी राज्य की जनता जान रही है। जब जांच एजेंसी और भ्रष्ट नेता पकड़े जाते हैं तो यह लोग एजेंसी पर ही सवाल खड़ा करते हैं। भाजपा केंद्र सरकार से मांग करती है कि ऐसे भ्रष्ट नेताओं की जांच कर जनता की लूटी हुई पैसा को पाई पाई उन्हें लौटाया जा सके। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और उनके गठबंधन के नेता भ्रष्टाचार में संयुक्त होने का मामला जब उजागर होता है तो जांच एजेंसी पर आरोप लगाना शुरू कर देते हैं। कांग्रेस का भ्रष्टाचार से शुरू से नाता है देश जब से आजाद हुई तब से कांग्रेस और भ्रष्टाचार का नाता चला आ रहा है।मनमोहन सिंह की सरकार में हुए कोयला घोटाला से लेकर कई घोटाले के बारे में देश की जनता जान रही है। गति दो दिनों से झारखंड के कांग्रेस के बड़े नेता नीरज साहू के कारनामे और उनकी निजी ठिकाने पर हुई छापामारी की खबर आई है इससे पूरा झारखंड बदनाम हुआ है। उन्होंने कहा कि अब तक के इतिहास में इतनी बड़ी राशि बरामद यह पहली घटना है। तुम मान जा रहा है कि आजादी के बाद से कांग्रेस और भ्रष्टाचार का इतिहास रहा है। भ्रष्टाचार से कांग्रेस का पुराना नाता रहा है। छत्तीसगढ़ के शराब घोटाला और महादेव ऐप से हुए घोटाले को देश की जनता जान चुकी है। मनमोहन के प्रधानमंत्री के काल में कोयला घोटाला, 2ऋघोटाला से पूरी देश शर्मसार हुई। उन्होंने कहा कि जहां भी कांग्रेस और गठबंधन की सरकार रही वहां भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। राज की जनता झारखंड में गठबंधन सरकार के कारनामे को जान चुकी है निश्चित रूप से आने वाले समय में यहां की जनता माकूल जवाब देगी। विधायक ने कहा कि लिट्टीपाड़ा ऐसे दुर्गम क्षेत्र के लोगों के लिए रघुवर दास की सरकार में 217 करोड़ की पेयजल योजना की स्थिति दी थी लेकिन आज तक यह योजना राज्य की वर्तमान गठबंधन सरकार के निष्कर्ता के कारण धरातल पर नहीं उतर पाई। परिणाम यह है कि आज लोग खुला झरना नाले का पानी पीने को मजबूर हैं और मलेरिया डायरिया ऐसी बीमारी के चपेट में आकर कॉल के गाल में समा रहे हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाजपा जिला अध्यक्ष अमृत पांडे, अनुग्रहित प्रसाद शाह, बाबू धन मुर्मू, हिसाबी राय, पंकज शाह, मीरा पांडे, मिसफिका हसन, विश्वनाथ भगत मौजूद थे।

वन विभाग द्वारा वाहन सहित सखवा का लकड़ी किया गया जप्त

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

हिरणपुर(पाकुड़)। डीएफओ पाकुड़ के निर्देश पर शनिवार अहले सुबह हिरणपुर वन प्रक्षेत्र पदाधिकारी विनोद सिंह के नेतृत्व में वन कर्मियों ने लिट्टीपाड़ा अंतर्गत गम्हरिया से एक पिकअप वाहन सहित चिरान की गई लकड़ियों को जब्त किया। पिकअप वाहन संख्या जेएच16 बी 4296 सखुआ की चिरान की गई लकड़ियों को लिट्टीपाड़ा बरहेट पथ से ले जाया जा रहा था कि वन कर्मियों ने गम्हरिया निकट छापेमारी कर पकड़ा। जिसमे सखुआ की 54 पीस सखुआ लकड़ी की चिरान की गई चौखठ पाया गया। जिसे तत्काल जब्त कर लिया। बताया जा रहा है कि वाहन धरमपुर स्थित किसी व्यक्ति का है। जिससे लकड़ियों की तस्करी किया जा रहा था। यह कारोबार वर्षो से फलफूल रहा है। लिट्टीपाड़ा अंतर्गत डुमरिया, ताल पहाड़ी क्षेत्रों में भी यह अवैध कारोबार काफी फैला हुआ है। जहाँ जंगलों की कीमती लकड़ियों को काटकर तस्करी की जा रही है। वन प्रक्षेत्र पदाधिकारी ने बताया कि लकड़ियों की अवैध तस्करी किसी भी हालात में होने नही दी जाएगी। जब्त वाहन के मालिक व चालक के ऊपर मामला दर्ज किया जाएगा। उधर जब्त लकड़ियों की संख्या पर भी संदेह जताया जा रहा है। इस कार्रवाई के दौरान वन कर्मी अनुपम यादव, स्टेफन हेम्ब्रम आदि उपस्थित थे।

सरकार आपके द्वार शिविर में अबूआ आवास को लेकर ग्रामीणों में ज्यादा उत्सुकता

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

हिरणपुर(पाकुड़)। इस बार के सरकार आपके द्वार शिविर में अबूआ आवास योजना को लेकर ग्रामीणों की ज्यादा उत्सुकता देखी गई। जहाँ काफी संख्या में लोगो को अबूआ आवास को लेक- र शिविर में आवेदन जमा करते देखा गया। सुंदरपुर में आयोजित शिविर में करीब 1100 लोगो ने आवास को लेकर आवेदन जमा किया। शिविर में अपर समाहर्ता मंजुरानी स्वांसी व बीडीओ दिलीप टुडू के द्वारा जेएसएलपीएस के पांच सखिमण्डल दीदियों को कुल 30 लाख ऋण की चेक वितरण की गई। इसके अलावे स्कूली छात्राओं को साइकिल की चेक राशि, बच्चो को जाति प्रमाण पत्र, राशनकार्ड धारकों को साड़ी -धोती सहित काफी संख्या में लोगो को पौधा का भी वितरण किया गया। अपर समाहर्ता ने बताई की इस शिविर का आयोजन आपके गाँव -पंचायत में की जा रही है। जिससे कि आपसे सीधे जुड़कर आपकी समस्याओं का निदान किया जा सके। सभी को सरकारी योजनाओं का जानकारी रहना आवश्यक है। जिससे कि आप लाभ ले सकते है। इस मौके पर बीपीओ ट्विकल चौधरी, कृषि पदाधिकारी सूर्या मालतो, बीपीआरओ रामकुमार साहा आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

कोयला/बालु/पत्थर के अवैध उत्खनन एवं परिवहन में संलिप्त तस्करों के विरुद्ध करे कारवाई : एसपी

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

पाकुड़। पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में मासिक अपराध गोष्ठी समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. जिसमे पूर्व माह में किये गए कार्यो की समीक्षा के उपरांत सभी थाना/ओपी प्रभारी को आवश्यक दिशा- निर्देश दिया गया. एसपी ने कहा की हाल ही में धनबाद जेल में घटित गोली कांड के मद्देनजर एसडीपीओ डीएसपी एवं थाना प्रभारी, नगर को जेल/न्यायालय परिसर की सुरक्षा का नियमित जांच करने हेतु निर्देशित किया गया, लंबित कांडो की समीक्षोपरांत कांडो का त्वरित निष्पादन हेतु निर्देशित किया गया, लूट/डकैती/चोरी की घटनाओं का उद्भेदन करने एवं उक्त कांडो पर अंकुश लगाने हेतु निर्देशित किया गया, कोयला/बालु/पत्थर के अवैध उत्खनन एवं परिवहन में संलिप्त तस्करों के विरुद्ध कारवाई करने, ट्रैक्टर इत्यादि वाहनों में अतिरिक्त एंगल/पटरा एवं बिना रजिस्ट्रेशन नंबर प्लेट के वाहनों को जब्त कर एंगल/पटरा कटवाने एवं एम.वी .एक्ट के तहत कारवाई करने हेतु निर्देशित किया गया, माननीय न्यायालय/पुलिस मुख्यालय द्वारा निर्गत महत्वपूर्ण आदेशो से सभी को अवगत कराते हुए अनुपालन हेतु निर्देशित किया गया, लंबित वारंट बीडब्लू/ एनबीडब्लू/डीडब्लू/ पीडब्लू का निस्पादन करने हेतु निर्देशित किया गया, परिवाद पत्र/पासपोर्ट/चरित्र सत्यापन का निष्पादन निर्धारित समय में करने हेतु निर्देश दिया गया, QR petroling/बिट पैट्रोलिंग को भ्रमणशील रहकर सतत निगरानी रखने हेतु निर्देशित किया गया, आगामी लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारी हेतु सभी आवश्यक विवरणी संधारण करने के साथ साथ प्लान तैयार करने हेतु निर्देशित किया गया। बैठक में डीएसपी बैद्यनाथ प्रसाद, एसडीपीओ नवनीत हेम्ब्रम, नगर थाना प्रभारी सह पुलिस इंस्पेक्टर मनोज कुमार, अमड़ापाड़ा थाना प्रभारी सह पुलिस इंस्पेक्टर गोपाल कृष्ण यादव, पुलिस इंस्पेक्टर उमाशंकर कुमार, सहित हिरणपुर, लिट्टीपाड़ा, महेशपुर, पाकुडिया सहित सभी ओपी प्रभारी मौजूद थे.

सोनिया गांधी के जन्मदिवस पर कांग्रेसियों ने मरीजों के बीच फल का किया वितरण

जामताड़ा। कांग्रेस पार्टी की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी के 77 वें जन्मदिवस पर जिला कांग्रेस कमेटी के द्वारा सदर अस्पताल में मरीजों के बीच फल एवं अन्य खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष हरिमोहन मिश्रा के नेतृत्व में दर्जनों कार्यकर्ता शनिवार शाम को सदर अस्पताल पहुंचे। अस्पताल के विभिन्न वार्डों में इलाजरत मरीजों के बीच कांग्रेसियों ने फल एवं अन्य खाद्य सामग्री का वितरण किया और उन्हें बताया कि आज हमारे पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी जी का जन्मदिन है इसलिए हम आपको सहायता स्वरूप फल एवं मिठाई प्रदान कर रहे हैं। जिला अध्यक्ष हरिमोहन मिश्रा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी हमेशा से बलिदानियों की पार्टी रही है। पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर स्व इंदिरा गांधी और स्वर्गीय राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करते हुए अपने प्राण न्योछावर किये। कांग्रेस के नेताओं ने इस देश की खातिर जितने बलिदान दिए हैं वह किसी अन्य पार्टी के लिए कदापी भी की संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी के कुशल नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी आज एक नए रूप में देशभर में लोगों की सेवा के लिए तत्पर है। सोनिया जी के नेतृत्व का ही देन है कि आज पार्टी एक अलग स्वरूप में नजर आ रही है और दिन-ब-दिन कांग्रेस का सांगठनिक ढांचा देशभर में मजबूत होता जा रहा है। हम सभी कांग्रेसी कार्यकर्ता नेतृत्व क्षमता की मिसाल कहीं जाने वाली सोनिया गांधी जी के लंबे उम्र की कामना करते हैं और उनके स्वस्थ जीवन और सफल मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं। कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से वरिष्ठ कांग्रेसी अजीत दुबे, विजय दुबे, कराली चरण सरखेल, नंदकिशोर सिंह, विमल कुमार भैया, , ताकेश सिंह, शिशिर मंडल सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

सर्वजन पेंशन योजना से आच्छादित हो रहे हैं लोग

- **गोड्डा, प्रखंड विकास पदाधिकारी ने शिविर के माध्यम से ऑन द स्पॉट 03 योग्य लाभुकों को दिया पेंशन का लाभ**

गोड्डा । राज्य सरकार व जिला प्रशासन के सक्रिय प्रयासों से सरकार की महत्वाकांक्षी कार्यक्रम # आपकी योजना आपकी सरकारआपके द्वार का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है। सरकार व जिला प्रशासन का उद्देश्य है कि जिले के छूटे हुए लाभुकों को सरकार की योजनाओं से लाभान्वित कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाया जाय। इसी कड़ी में आज दिनांक शनिवार को गोड्डा, प्रखंड के पांडुबथान पंचायत में आयोजित आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में तीन लाभुकों को पेंशन का लाभ दिया गया। पेंशन की स्वीकृति मिलने पर लाभुकों के चेहरे के खिल उठे, उन्होंने राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जानकारी के अभाव में कई दिनों से आर्थिक परेशानियों से जूझ रहे थे, सरकार की महत्वकांक्षी कार्यक्रम के माध्यम से पेंशन की स्वीकृति मिली है, राज्य सरकार को बहुत बहुत आभार। आज 3 लाभुकों को पेंशन की स्वीकृति दी गई। जिसमें 1. दुर्गा महतो,ग्रामः-पांडुबथान 2. मरंगमय सोरेन,ग्रामः- जमुआ 3. होपनमय हंसदा,ग्रामः- पांडुबथान

आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम के तहत आयोजित शिविरों में ऑन द स्पॉट मिल रहा योजनाओं का लाभ

गोड्डा । गोड्डा जिले के महागामा प्रखंड के सिनपुर पंचायत में आयोजित ₹आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार₹ कार्यक्रम में SHG ग्रुप की कुल 05महिला समुह के बीच 30,00,000 (30लाख) के केश क्रेडिट लिंकेज (CCL) का वितरण किया गया। मौके पर SHG समूह की दीदियों ने माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस राशि की सहायता से वे बकरी पालन, मुर्गी पालन आदि व्यवसाय कर अपना आजीविका को बढ़ाएंगे साथ ही साथ अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा और उच्चतम जीवन प्रदान करेगी।

इंस्पेक्टर व थाना प्रभारी ने बच्चों को दिये टिप्स

डुमरी। उत्क्रमित उच्च विद्यालय जरूआडीह में शनिवार को पुलिस इंस्पेक्टर मनोज कुमार और डुमरी थाना प्रभारी पवन कुमार ने हाई स्कूल के विद्यार्थियों के बीच बने एक दिन का शिक्षक।इस दौरान उन्होंने जहां स्कूली बच्चों को जनरल नॉलेज की जानकारी,देश विदेश की जानकारी और कानून की जानकारी बच्चों को दी।साथ ही बच्चों से अपने लक्ष्य निर्धारित कर उस पर कठिन परिश्रम करने की अपील की। वहीं बच्चों से नियमित रूप से विद्यालय आने एवं पढ़ाई करने को कहा।विद्यालय के बच्चों के बीच मोटीवेटर के रूप में उपस्थित इंस्पेक्टर एवं थाना प्रभारी ने छात्र छात्राओं को कई रोचकपूर्ण जानकारी देते हुए अंग्रेजी,गणित,विज्ञान व अन्य विषयों की सरल पढ़ाई के लिए कई फॉर्मुले बताये। इस दौरान विद्यालय के सभी शिक्षक उपस्थित थे।

जिद पर अड़े 13 किसानों पर केस दर्ज

बेंगाबाद। किसानों द्वारा अपनी विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलन पर उतरे किसान जनता पार्टी के सदस्यों के खिलाफ बेंगाबाद थाना में केस दर्ज किया गया है। किजपा के संस्थापक सदस्य अवधेश सिंह, देवचन्द्र यादव समेत 13 नामजद व करीब 100 अज्ञात लोगों के विरुद्ध दर्ज सरकारी काम में बाधा पहुंचाने सहित अन्य आरोप लगाते हुए प्राथमिक दर्ज किया गया है।ज्ञात हो कि आठ सूत्री मांगों को लेकर किजपा सदस्य बुधवार से आंदोलन कर रहे थे। बीते शुक्रवार को आंदोलनकारी प्र-खंड मुख्यालय से एनएच 114 ए पर विरोध प्रदर्शन करने जा रहे थे। लेकिन पुलिस ने उन्हें थाना के समीप रोक लिया। इससे नाराज किजपा सदस्य गिरफ्तारी देने की जिद पर अड़ गए।सीओ राजेश डुंगडुंग और पुलिस इंस्पेक्टर ममता कुमारी के काफी समझाने के बाद भी नहीं माने और दोपहर से शाम तक 6 घंटे थाना के स्वागत कक्ष में डटे रहे। देर शाम एसडीपीओ अनिल कुमार सिंह से दूरभाष पर वार्ता के बाद आंदोलन वापस लिया गया था।

भाजपा नेताओं ने मुख्य मंत्री से इस्तीफे की मांग की

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

गिरिडीह। राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों से आईटी रेड में मिले करीब 300 करोड़ नगद रुपए के मामले को लेकर भाजपा ने कांग्रेस और हेमंत सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। इसी क्रम में शनिवार को भाजपा के जिला कार्यालय में पार्टी के जमुआ विधायक केदार हाजरा, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुरेश साहू, चुन्नूकांत, जिला अध्यक्ष महादेव दुबे ने प्रेसवार्ता कर धीरज साहू और कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। इस दौरान भाजपा नेताओ ने कहा कि रविवार को गिरिडीह भाजपा शहर में आक्रोश पूर्ण प्रदर्शन करेगी। जिसमे सैंकड़ो की संख्या में भाजपा नेता और कार्यकर्ता शामिल होंगे।

जमुआ विधायक श्री हाजरा ने कहा कि देश में कांग्रेस का इतिहास ही घोटाला का रहा है, क्योंकि कांग्रेस को जब भी मौका मिला है तब इसने देश में घोटाले का कीर्तिमान बनाया है।कहा कि राज्यसभा सांसद धीरज साहू के दर्जन भर ठिकाने से बरामद तीन सौ करोड़ नगद इसकी बानगी है। अभी आईटी की कारवाई जारी है, तो तय है और नगद मिलेंगे, लेकिन हैरानी की बात है सीएम हेमंत सोरेन और प्रदेश कांग्रेस के सारे नेताओ के साथ नए गठबंधन के नेता भी धीरज साहू के मामले में मुंह बंद किए हुए हैं। कहा कि नेशनल हेराल्ड मामले में 725 करोड़ का घोटाला हुआ और इसमें सोनिया और राहुल गांधी दोनों जमानत पर हैं। इससे साफ तौर पर साबित होता है कि कांग्रेस जिसे अपना सहयोगी बनाती है, उसे भी भ्रष्ट बना देती है। इस दौरान भाजपाईयों ने धीरज साहू मामले में हेमंत सरकार से इस्तिफे की मांग की।

वहीं भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुरेश साहू ने कहा कि सांसद के पास से 300 करोड़ नगद बरामद होने के बाद हेमंत सरकार के गरीबों वाले सरकार के दावा का सच सामने आया है, क्योंकि हर रोज धनबाद,गिरिडीह से करोड़ों रुपए हेमंत सरकार के पास जा रहे है, हेमंत सरकार के गिरिडीह के नुमाइंदे ही हेमंत सोरेन के पास करोड़ों रुपए हर माह भेजते हैं, ऐसे में हेमंत सरकार को तुरंत इस्तीफा देना चाहिए।

इस प्रेसवार्ता में प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, जिला महामंत्री संदीप डंगाईच, सुभाष चंद्र सिन्हा,किसान मोर्चा के दिलीप बर्मा, भाजपा नेत्री शालिनी वैशखियार समेत कई नेता मौजूद थे।

महेशपुर विधायक ने 15 करोड़ की लागत से 9 अलग-अलग सड़कों का किया शिलान्यास

कहा छोटी-छोटी गांव को पक्की सड़क से जोड़ने का होगा कम

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

पाकुड़। महेशपुर विधानसभा क्षेत्र के झामुमो विधायक प्रोफेसर स्टीफन मरांडी ने शनिवार को महेशपुर इलाके में नो अलग-अलग सड़क निर्माण कार्य की आधारशिला रखी। विधायक ने महेशपुर पीडी रोड महेशपुर पाकुड़िया हाथी मारा मोड़ से चिड़िया पोखर नवोदय विद्यालय तक, हाथीमारा मोड़ से खड़ा मानिकपुर तक, जिया पानी से एलियापुर तक, कुंद्रा से खेराबनी तक, मुर्गा दंगा से नयाग्राम तक के अलावे अन्य कल 9 सड़कों का शिलान्यास किया। मुर्गा दंगा में आयोजित से शिलान्यास समारोह में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्र के विकास के प्रति संवेदनशील और संकल्पित है। महेशपुर और पाकुड़िया क्षेत्र में जो भी गांव अब तक पक्की सड़क से छूटा है उसे जल्द ही स्वीकृति दिवाकर पक्की सड़क का निर्माण किया जाएगा। विधायक प्रोफेसर मरांडी ने लोगों को कहा कि राज्य सरकार द्वा-रा चलाई जा रही कार्यक्रम सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में भाग ले और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लें। शिलान्यास कार्यक्रम को जिला परिषद अध्यक्ष जूली कृष्ण मणि मरांडी ने संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड सरकार चुनाव के वक्त जनता से किए गए वादे को धरातल पर उतरने का काम कर रही है। एक गांव को सड़क से जोड़ने का काम कर रही है। उन्होंने लोगों से अपील की सरकार आपके द्वारा कस्टम में भाग ले और अधिक से अधिक राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ ले। उक्त समारोह को अब्दुल्ल अदुद्, कुणाल हेंब्रम, माइकल हेंब्रम, जिला परिषद सदस्य बैजनाथ कोरा, सहायक अभियंता विजय कुमार सिंह ने भी संबोधित किया। मौके पर अभियंता धर्मदास कुजूर, संवेदक सत्य कंस्ट्रक्शन मौजूद थे।

जिले के सभी प्रखंडों में आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन

कई योजनाओं का ऑन द स्पाट दी गई स्वीकृति, समस्याओं का किया गया समाधान

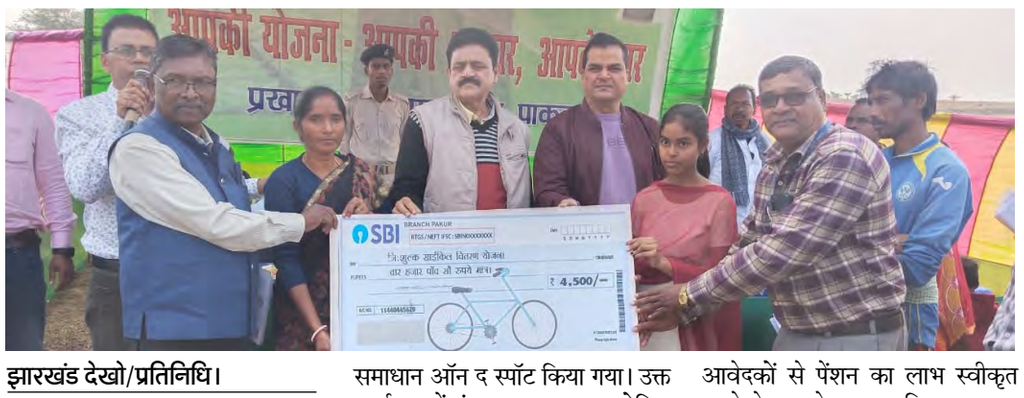

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

पाकुड़। जिले के सभी प्रखंडों में शनिवार को आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार का कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस अवसर पर पाकुड़ प्रखंड के रामचन्द्रपुर पंचायत, हिरणपुर प्रखंड के सुंदरपुर पंचायत, लिट्टीपाड़ा प्रखंड के जामजोड़ी पंचायत, अमड़ापाड़ा प्रखंड के सिंगारसी पंचायत, महेशपुर प्रखंड के चंडालमारा पंचायत, पाकुड़िया प्रखंड के बीचपहाड़ी पंचायत एवं नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड नंबर 13 में कार्यक्रम के तहत शिविर आयोजित की गई। शिविर में विभिन्न विभागों के स्टॉल लगाए गए थे। जहां विभिन्न योजनाओं व समस्याओं से संबंधित आवेदन प्राप्त किए गए। साथ ही कई योजनाओं की स्वीकृति व समस्याओं का समाधान ऑन द स्पॉट किया गया। उक्त कार्यक्रम में पंचायत स्तर पर आयोजित शिविरों में अबुआ आवास, गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड, ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत मनरेगा के जॉब कार्ड हेतु आवेदन प्राप्त करने तथा प्रवासी श्रमिकों के लिए प्राथमिकता के आधार पर जॉब कार्ड बनाने का निर्देश दिया गया। वहीं हड़िया बिक्री के रोजगार में संलग्न महिलाओं की पहचान कर उन्हें फूलो-झानो आशीर्वाद योजना के तहत वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध कराने, श्रम विभाग द्वारा असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों का ई-श्रम पोर्टल पर निबंधन कराया गया। सोना-सोबरन धोती/लुंगी-साड़ी योजना के तहत लाभुकों के बीच वस्त्र वितरण तथा सामाजिक सुरक्षा के तहत जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किया गया। वहीं पेंशन योजना अंतर्गत नए आवेदकों से पेंशन का लाभ स्वीकृत करने हेतु आवेदन प्राप्त किए गए तथा पेंशन हेतु प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों पर जांचोपरांत स्वीकृति एवं लाभुकों को पेंशन प्राप्त करने में होने वाली समस्याओं का निराकरण किया गया। इसके साथ ही कृषि ऋण माफी योजना अंतर्गत लाभुकों के कृषि ऋण माफी हेतु आवेदन प्राप्त कर उन पर कार्रवाई का निर्देश दिया गया तथा किसान क्रेडिट कार्ड हेतु आवेदन एवं बैंकों द्वारा स्वीकृत किसान क्रेडिट कार्ड का लाभुकों के बीच वितरण किया गया। कार्यक्रम में संबंधित प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी, जिला स्तर से प्रतिनियुक्त पदाधिकारी, संबंधित पंचायतों के कार्यकारी मुखिया, विभिन्न विभागों के प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी व कर्मी ग्रामीण जनता समेत अन्य उपस्थित थे।

फूलो झानो मेडिकल कॉलेज दिग्घी में छात्र-छात्राओं ने किया हंगामा

छात्र-छात्राओं के हंगामे को शांत कराने मेडिकल कॉलेज पहुंची पुलिस

मेस संचालक समेत दर्जन भर लोगों को प्राचार्य कार्यालय में बनाया बंधक

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। उपराजधानी दुमका के फूलो झानो मेडिकल कॉलेज दिग्घी में सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने शनिवार को जमकर हंगामा किया। छात्रों का आरोप है परिसर में आकर बाहरी लोगों ने छात्रों पर पथराव कर दिया जिससे कई छात्र घायल हो गये। मामला मेडिकल कॉलेज छात्र और मेडिकल कॉलेज में चलने वाले मेस के संचालक के बीच हुई। हंगामा इतना बढ़ गया कि पूरा मेडिकल कॉलेज में सुरक्षा को लेकर दुमका जिला के कई थानेदार सहित जरमुण्डी एसडीपीओ और डीएसपी (साइबर) को फूलो झानो मेडिकल कॉलेज पहुँचना पड़ा। वही मेडिकल कॉलेज प्रशासन द्वारा अस्वासन के बाद मेडिकल कॉलेज छात्र शांत हुए। दरसल दुमका के फूलो झानों मेडिकल कॉलेज में प्राचार्य कक्ष में कैंटीन चलाने वाले पोलिना मुर्मू और चंदन सिंह सहित दर्जन भर लोग अपने को मेडिकल कॉलेज के प्रिसिपल कार्यालय के अंदर अपने को बंद कर लिया क्योंकि उनपर मेडिकल कॉलेज छात्रों का आरोप था कि ये लोग छात्रों के साथ मार पीट करते हुए उनलोगों पर पथराव किया था। इसके बाद फूलो झानो मेडिकल कॉलेज के छात्र उग्र हो गए और मेडिकल कॉलेज में हंगामा करने लगे। हंगामा की सूचना पर दुमका की पुलिस फूलो झानों मेडिकल कॉलेज पहुंच गयी। यहां पहुंचने पर पुलिस पदाधिकारियों को पता चला कि कैंटीन चलाने वाले पोलिना मुर्मू का कर्मचारी चंदन सिंह परिसर में छात्र-छात्राओं को परेशान करता था। चंदन सिंह शराब पीकर यहां हंगामा करता था। छात्रों ने चंदन सिंह से इस विषय पर बात की तो उसने छात्रों को धमका दिया। छात्रों का आरोप था कि सबेरे दो दर्जन से अधिक असामाजिक तत्वों ने मेडिकल कॉलेज परिसर में पहुंच कर छात्र- छात्राओ पर पथराव करना शुरू कर दिया। उसके बाद छात्रो की ओर से पलटवार करते हुए जब आरोपियों को खदेड़ा तो पोलिना मुर्मू, चंदन सिंह और उनके साथी प्रिसिपल के चैंबर में घुस गये। मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने लिखित शिकायत की है जिसके आधार पर मेस चलाने वाले के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की गई है। इस मामले में छात्र- छात्राओ ने अपनी समस्या बतायी है। छात्रों ने सुरक्षा देने के साथ साथ मेस को बंद करने की मांग फूलो झानो मेडिकल कॉलेज प्रबंधन से की है। छात्रों को पुलिस और प्रशासन ने आश्वस्त किया कि परिसर में पूरी सुरक्षा उपलब्ध करवाई जाएगी तब जाकर छात्र माने और प्राचार्य ने छात्रों के सामने ही पोलिना के कैंटीन का अनुबंध रद्द करने की बात कही। दुमका के दिघ्यी में संथाल परगना का एक मात्र फूलो झानो मेडिकल कॉलेज है जहां मेडिकल के लगभग 400 छात्र छात्राएं पढ़ रहे है। इस तरह की घटना से अब मेडिकल कॉलेज पर कई सवाल खड़े होना शुरू हो गया है। मेडिकल कॉलेज में एक भी गार्ड नही है जबकि उसी कैम्प्स के अंदर छात्राओं का भी होस्टल है और छात्रों का भी होस्टल है। खाना खाने का एक मात्र साधन मेस ही है।

मानवाधिकार के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस की पूर्व संध्या पर सिदो कान्हू मूर्मू विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान एवम्-इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।जिसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो (डॉ) बिमल प्रसाद सिंह ने की . प्रो सिंह ने अपने संबोधन कहा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानवाधिकार के सार्वोम घोषणा पत्र जारी होने के 75 वर्ष पूरा होने पर सबको शुभकामनाएँ दी और बताया कि कैसे संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में पूरा विश्व मानवाधिकार के संरक्षण और संवर्धन के लिये काम कर रहा है . उन्होंने समानता , स्वतंत्रता और सबको न्याय दिलाने के लिए सबको प्रयास करने की ज़रूरत है . आज मानवाधिकार के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं जिसका सामना सबको मिल कर करना होगा . विश्वविद्यालय के डीएसडब्ल्यू डॉ संजय कुमार सिंह ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने संबोधन में भारतीय संविधान में मानवाधिकार के विभिन्न प्रावधान को बतलाया और छात्रों को अपने अधिकार के साथ कर्तव्य के प्रति भी जागरूक रहने की बात कही . डॉ संजीव कुमार सिन्हा ने अपने संबोधन में मेग्ना कार्टा से मानवाधिकार के घोषणा पत्र लागू होने के बीच विश्व में अनेक संघर्ष एवम् क्रांतियों का वर्णन किया. डॉ अजय सिन्हा ने अपने संबोधन में कहा कि आम तौर पर मानवाधिकार की अवधारणा को पश्चिम से आई हुई अवधारणा समझा जाता है जबकि सच यह है कि मानवाधिकार की सोच भारत की सनातन सोच है . भारत वसुधेव कुटुंबकम् की सोच से चलता रहा है और मानव ही नहीं प्राणी मात्र के प्रति सहिष्णुता का भाव रखता है . वैदिक साहित्य के अलाव भगवान बुद्ध , महावीर , नानक , कबीर , विवेकानंद , गांधी और अंबेडकर जैसे लोग सतत मानवाधिकार की रक्षा के लिए संघर्ष करते रहे. कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ संजीव कुमार सिन्हा ने कुलपति प्रो बिमल प्रसाद सिंह को और इतिहास विभाग की अध्यक्ष डॉ स्नेहलता मूर्मू ने डीएसडब्ल्यू डॉ संजय कुमार सिंह को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया.कुलपति प्रो बिमल प्रसाद सिंह ने इस अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम आए खुशी कुमारी , द्वितीय स्थान पर आये मीरा कुमारी , और तृतीय स्थान पर आये मेरी क्रिस्टीना हेमब्रम को पुरस्कृत किया .संगोष्ठी का मंच संचालन डॉ कमल शिवकान्त हरि ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो अमिता कुमारी ने किया . इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अनेक छात्र छात्राये उपस्थित थे।

सक्सेस स्टोरी : महिलाओ के लिए प्रेरणा की स्रोत बनी सावित्री देवी

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। सावित्री देवी अपने पति रंजित राय दो बेटे और एक बेटी के साथ दुमका सदर प्रखंड के मालभान्दारो पंचयत अंतर्गत भोरिसिमल गाँव में निवास करती है। सावित्री देवी एवं उनके पति अपने जीवन निर्वाहन एवं दैनिक जरुरत को पूरा करने के लिए दिहाड़ी पर मजदूरी करते थे जिसमे उन्हें जो राशी मिलती वो उनसे अपने दैनिक आवश्कता को पूरा करने की कौशिश करते, शुरू में सब सही लग रहा था परन्तु जब एक एक कर उनके परिवार में उनके तीन बच्चे आये तो उनकी चिंता बढ़ गयी और उनके अच्छी शिक्षा और परवरिश को लेकर वे हमेशा अशमंजश में रहते थे, पर अतिरिक्त दिहाड़ी करने पर भी उन्हें बहुत ज्यादा कुछ हासिल नही हो पाई, और इस बात को लेकर वे हमेशा ही चिंता में रहते थे। इसी बीच उनको अपने गांव के सक्रिय महिला से सखी मंडल के बारे में पता चला।

- **समूह में जुड़ने के बाद की स्थिति**

2 वर्ष पूर्व सावित्री देवी सखी मंडल से जुड़ी एवं सखी मंडल की सदस्य बनी। उसके बाद समूह एवं ग्राम संगठन में चल रहे जोहार परियोजना के बारे में पता चला। उन्होंने जोहार परियोजना से 5000 ऋण लेकर उन्नत एवं आधुनिक तरीके से कृषि कार्य शुरू किये एवं उन्हें उससे अच्छा मुनाफा आने लगा । अपने इस नए काम से वे काफी खुश हुए और अपने लिमिट को और बढ़ाने का निर्णय लिए। उन्होंने जोहार परियोजना के अंतर्गत मिल रहे लाभ के बारे में परियोजना के प्रखंड अधिकारियों से विस्तार से जानकारी प्राप्त की एवं खुद से परियोजना के आधीन कुछ व्यवसाय करने की इच्छा जाहिर की। जोहार परियोजना से जुड़कर आर्थिक स्थिति को दुगुना करने के लिए मुर्गी शेड निर्माण के लिए 60000 रू० कार्यशील पूजी 40000रु0 और मुर्गा चूजा खरीद हेतू 12000 रु० परियोजना द्वारा दिया गया। जिससे ददीदी 5 साईकिल चूजा पालन कर प्रत्येक साईकिल मुर्गी बेचने पर 4000 से 5000 तक की आमदनी कर रही है। अभी अपने इस व्यवसाय के बाद वे काफी खुश है एवं अपनी बेटो और बेटी को अच्छी तरह पढ़ाने का उनका सपना साकार हो रहा है। सावित्री दीदी अभी अपने गाँव के साथ साथ कई महिलाओ के लिए प्रेरणा की स्रोत बनी।

जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव संपन्न, 38 प्रत्याशियों का भाग्य मत पेटी में बंद, गिनती आज

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। झारखंड स्टेट बार कौंसिल के सदस्य पर्यवेक्षक बालेश्वर सिंह की देखरेख में शांति पूर्ण माहौल में सौहार्दपूर्ण वातावरण में जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव सम्पन्न हुआ। निर्वाची पदाधिकारी अमर जीवन के नेतृत्व में सहायक निर्वाची पदाधिकारी मो राजा और शिव शंकर चौधरी की मौजूदगी में दिन के 11 बजे मतदान शुरू हुआ। 16 सदस्यीय कार्यकारिणी समिति के विभिन्न पदों के विरुद्ध 38 प्रत्याशियों का भाग्य मतपेटी में बंद हो गया। झारखंड स्टेट बार कौंसिल द्वारा अनुमोदित 399 में से 369 मतदाताओं ने मतदान का उपयोग किया। सभी प्रत्याशियों की उपस्थिति में मतपेटी को सील किया गया। इस बार के चुनाव में अध्यक्ष, महासचिव और कोषाध्यक्ष पद पर कांटे की टक्कर होने के आसार हैं। रविवार को दिन के 11 बजे से पर्यवेक्षक की मौजूदगी में मतगणना शुरू की जायेगी।

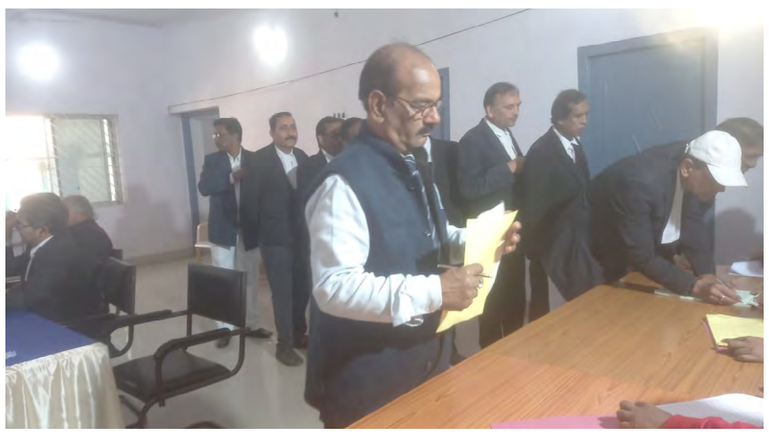

संक्षिप्त समाचार

शिवम पांडेय की मौत की जांच को लेकर झारखंड हाई कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की गई

बोकारो। वित्तीय अनियमितता और छात्र शिवम पांडेय की मौत की जांच को लेकर झारखंड हाई कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की गई है।जानकारी के अनुसार प्रार्थी राजेश कुमार सिंह की ओर से अधिवक्ता अभय कुमार मिश्रा ने याचिका दाखिल की है। याचिका में कहा गया है कि आइआइएम में पढ़ने वाले छात्रों की सुरक्षा नहीं है। वहां रात में कैंटीन चलती है, जहां छात्र नशा करते हैं। कहा गया कि हाल में ही छात्र शिवम पांडेय का शव कॉलेज हॉस्टल के छत पर मिला था, जिसकी मौत फांसी लगाने से होने की बात कही गई।

बताया गया कि कैंटीन का ठेका देने के लिए दो हजार करोड़ सालाना टर्नओवर की शर्त लगाई गई थी, जबकि अन्य आईआईएम या आइआइटी में अधिकतम नौ करोड़ रुपये टर्नओवर की कंपनियां काम कर रही हैं। इस वजह से 125 रुपये में मिलने वाला खाना अब 350 रुपये का है। दायर याचिका में कहा गया कि बीते अगस्त माह में आईआईएम एक्ट में संशोधन किया गया है, जिसके अनुसार अब निदेशक मंडल के चेयरमैन की नियुक्ति राष्ट्रपति से की जानी है। याचिका में चेयरमैन की नियुक्ति, छात्र शिवम पांडेय की मौत सहित अन्य अनियमितता की जांच करने की मांग की गई है।

ब्लास्ट फर्नेस 01 में कार्यरत स्लैग ग्रैनुएशन प्लांट का उद्घाटन

बोकारो कार्यालय । 09 दिसंबर को ब्लास्ट फर्नेस 01 में कार्यरत स्लैग ग्रैनुएशन प्लांट तथा नवीनीकृत डीवाटरिंग ड्रम की हाइड्रोलिक मोटर का उद्घाटन निदेशक प्रभारी अतानु भौमिक, के द्वारा किया गया. इस अवसर पर अधिशासी निदेशक, मुख्य महा प्रबंधक गण तथा विभाग के वरीय अधिशासी गण उपस्थित थे.

सीएचएसजीपी#1 के चालू होने के बाद ब्लास्ट फर्नेस#1 से निकलने वाले पिघले हुए 95 % स्लैग का दानेदार स्लैग में रूपांतरण होगा तथा इससे पिघले हुए स्लैग डंपिंग से होने वाले भूमि प्रदूषण में भी कमी आएगी. इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में कैपिटल रिपेयर- मैकेनिकल , आयरन जोन के परियोजना विभाग, कैपिटल रिपेयर -इलेक्ट्रिकल , यातायात विभाग, सी ई डी तथा डी एन डब्लू का विशेष योगदान रहा है.

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार----

नैतिकता का क्षरण हैं,
पैसों का गबन हैं,
विषमता के वातावरण में,
गरीबों का मरण हैं ।

» भ्रष्टाचार----

भ्रष्ट इमानों की भाषा है,
तोड़ मानकों की दीवारें,
धन अर्जन की आशा है,
इड की अभिलाषा है।

» भ्रष्टाचार-----

एक ज़हर है--
बेईमानों की चाहते नज़र है,
सुबहोशाम दोपहर है ।

» भ्रष्टाचार-----

प्रजातंत्र के माथे,
लगा बदनुमा दाग है,
जो मिटाये मिटती नहीं,
होती दमित नहीं ,
उल्टे देती टिस,
ताउम्र चेतन मन को,
घेर आत्मग्लानि व चिंताओं में,
देती बना है मनोरोगी।

» भ्रष्टाचार ----

कीचड़ है,
दलदल है,
जो धँसा ले जाती है,
अंदर, खूब अंदर,
औ' शौकिये को भी,
ग़ालिब!
समा अपने में मजा,
दे जाती नशा गंभीर है।

» भ्रष्टाचार -----

आग है---
जिसके चिंगारी से,
जलता घर अपनों का भी है,
द्वेष राग हैं--
जिसके जिद्द में,
मिथ्या सम्मान में,
अड़ा है,
पड़ा है,
लिए लालच के बैशाखी खड़ा है,
अमानुषी इरादों से लैस,
शुक्राचारी प्रवृत्तियों से भरपूर है,
जड़ चेतन से,
मिटा देने को जो,
रास्ते आता हो सुहाग सिंदूर है।

» भ्रष्टाचार ----

प्रतीक है,
आर्थिक विषमता का,
सामाजिक विसंगति का,
दीमक है जो,
चाट जाने को,
मिटा देने को,
आतुर निशान है,
जहान हैं--
मान - सम्मान का,
गौरव इतिहास का,
संधि- समास का,
हर पल,
हर क्षण,
हर महफ़िल ,
अफ़सोस कि नीतियाँ भी सभी,
होती आगे इसके बेकार है,
क्योंकि ये
सुरूर हैं,
गुरुर है,
औरों के दरबार का !
अमानुषी सरकार का ?

» भ्रष्टाचार -----

अपराध की जननी है तो,
है टिकाऊँ भविष्य का खतरा भी,
मानवता की रक्षा को,
देश की सुरक्षा को,
नित्य जरूरी पहरा है ,
भ्रष्टाचार के सीने में,
करना चोट गहरा है ।

प्रस्तुति

डॉ विनोद कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग,
सिकामु विवि, दुमका ।

ईस्ट जोन इंटर यूनिवर्सिटी बेडमिन्टन टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए एसकेएमयू की टीम डिब्रूगढ रवाना

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। डिब्रूगढ यूनिवर्सिटी में आयोजित होने वाली ईस्ट जोन इंटर यूनिवर्सिटी बेडमिन्टन टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए सिदो-कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय की 6 सदस्यीय छात्रों की टीम शुक्रवार को डिब्रूगढ़ रवाना हो गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ बिमल प्रसाद सिंह, कुलसचिव डॉ. बिनय कुमार सिन्हा, क्रीडा पदाधिकारी डॉ. शम्श तबरेज खान, सीसीडीसी डॉ. बिजय कुमार, वित्त पदाधिकारी डॉ. डी एन गोराय आदि ने टीम को विदा किया। यह प्रतियोगिता 12 से 15 दिसंबर तक डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी के कैंपस में आयोजित होगी. एसकेएमयू के 6 सदस्य वाले टीम के साथ मेनेजर के रूप में शिवनंदन राय और बतौर कोच यश राज को साथ भेजा गया है. टीम में साहेबगंज महाविद्यालय के आदित्य कुमार, गोड्डा कॉलेज के मोहमद अरशद आजाद, मधुपुर कॉलेज के हिमांशु शेख, स्नातकोतर विभाग के संजीव टुडू और ए एन कॉलेज के पॉल हेम्ब्रम और नीरज कुमार हेम्ब्रोम शामिल हैं। कुलपति प्रो. डॉ बिमल प्रसाद सिंह ने खिलाड़ियों का हौसला अफजाई करते हुए खेल भावना और निष्पक्षता के साथ खेलने का सन्देश दिया। विश्वविद्यालय के क्रीडा पदाधिकारी डॉ. शम्स तबरेज खान ने खिलाडियों को शुभकामनायें देते हुए विदा किया.

न्यू जलपाईगुड़ी से पटना के बीच किशनगंज स्टेशन पर 2 मिनट का ठहराव।

- **प्रति सप्ताह मंगलवार छोड़कर इस ट्रेन का परिचालन होगा**

किशनगंज। किशनगंज सांसद डॉक्टर मोहम्मद जावेद आजाद के निरंतर प्रयासों के उपरांत रेल मंत्रालय के आदेश से न्यू जलपाईगुड़ी से पटना के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस की संचालन की मांग पूरी हुई। न्यू जलपाईगुड़ी से पटना के बीच किशनगंज स्टेशन पर 2 मिनट ठहराव के साथ प्रति सप्ताह मंगलवार छोड़कर इस ट्रेन का परिचालन होगा।

विकसित भारत संकल्प यात्रा बगोदर में संपन्न

गिरिडीह। बगोदर प्रखंड के जरमुने पश्चिमी पंचायत सचिवालय में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा संपन्न हुआ।मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री सह कोडरमा सांसद अन्नपूर्णा देवी शामिल हुईं।साथ ही बगोदर पूर्व विधायक नागेन्द्र महतो,जिप उपाध्यक्ष छोटेलाल यादव, प्रमुख आशा राज, प्रखंड विकास पदाधिकारी,अंचल अधिकारी,जिप सदस्य दुर्गेश साहू,जिप सदस्य प्रतिनिधि माथुर प्रसाद,सांसद प्रतिनिधि हजारीबाग भुनेश्वर पटेल, सांसद प्रतिनिधि जिला गिरिडीह दिनेश यादव,सांसद प्रतिनिधि जिला प्रशासन देवनाथ राणा, मंडल अध्यक्ष अशोक सोनी, राजेश पांडेय,मुखिया सविता रजक, मुखिया प्रमिला देवी,पंचायत समिति सदस्य गुड़िया देवी, सांसद प्रतिनिधियों सहितभाजपा के पदाधिकारीगण एवं हजारों ग्रामीण उपस्थित रहें।

धीरज साहू के यहाँ आईटी रेड में करोड़ो रूपये निकलने का मामला , भाजपा विधायक रणधीर सिंह ने मांगा सीएम हेमंत सोरेन का इस्तीफा , कहा - राज्य के मुखिया की इसमें संलिप्तता है

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू के यहां इनकम टैक्स की छापेमारी में लगभग 300 करोड रुपए नकद मिलने की बात कही जा रही है । इसी को लेकर सारठ विधानसभा के भाजपा विधायक रणधीर सिंह ने दुमका परिसदन में प्रेस वार्ता का आयोजन कर कांग्रेस सहित इंडिया गठबंधन पर जमकर निशाना साधा ।

रणधीर सिंह ने कहा कि जांच का विषय यह है कि इतना रुपया कहां से आया और कहाँ जाना था । उन्होंने कहा कि निश्चित रूप से इन रूपयो से आने वाले लोकसभा चुनाव और झारखंड के विधानसभा चुनाव को प्रभावित करने की योजना थी लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जो नारा है न खाऊंगा न खाने दूंगा उसी के वजह से यह पकड़ में आया है । आज तक किसी भी रेड में इतना पैसा नहीं मिला था । विधायक ने इस केस को ईडी को ट्रांसफर करने की मांग की ।

- **सीएम हेमंत सोरेन से मांगा इस्तीफा**

विधायक रणधीर सिंह ने कहा कि कांग्रेस के सांसद धीरज साहू के यहां से जो पैसे मिले हैं वह शराब घोटाला या फिर झारखंड के सत्तारूढ़ महागठबंधन के नेताओं के द्वारा जो गड़बड़ियां की गई है उससे संबंधित रुपए हो सकते हैं । जिसका सीधा संबंध झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से है इसलिए सीएम को अविलंब इस्तीफा देना चाहिए ।

- **सोना सोबरन धोती साड़ी योजना में लूट**

विधायक रणधीर सिंह ने झारखंड सरकार आपके द्वारा कार्यक्रम पर कहा कि यहाँ जनता को बेवकूफ बनाने का का काम किया जा रहा है । अबुआ आवास में प्रत्येक पंचायत में 1000 से ज्यादा आवेदन आ रहे हैं जबकि सिर्फ 30 से 40 लोगों को यह आवास मिलेगा । उन्होंने कहा कि सोना सोबरन धोती योजना के माध्यम से सरकार लूट में लगी है । सरकार ऊंची कमीशन लेने के चक्कर में खराब क्वालिटी के साड़ी धोती को ऊंची कीमत पर क्रय कर लोगों के बीच वितरित कर रही है । प्रेस वार्ता में जिला अध्यक्ष परितोष सोरेन,मीडिया प्रभारी पिंटू अग्रवाल एवं महामंत्री विवेकानंद राय मौजूद थे।

हिन्दी दैनिक
झारखण्ड देखो
खबरें, कहानी, लोग और बहुत कुछ

विकसित भारत संकल्प यात्रा विकसित भारत के लिए मोदी की गारंटी की यात्रा : बाबूलाल

विकसित भारत संकल्प यात्रा में देशभर के लाभार्थियों से प्रधानमंत्री ने ऑनलाइन संवाद किया

रांची। भाजपा प्रदेश कार्यालय में शनिवार को विकसित भारत संकल्प यात्रा में देशभर के लाभार्थियों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऑनलाइन संवाद किया। लाभार्थियों से बात कर उन्हें योजनाओं से मिले लाभ की जानकारी प्राप्त की। देश के सभी राज्यों के विभिन्न स्थानों से हजारों लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए, जिसमें महिला लाभार्थियों की संख्या ज्यादा थी।

प्रदेश कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा विकसित भारत के लिए मोदी की गारंटी की यात्रा है। यह गांव गरीब, किसान मजदूर महिला, युवा सभी के साथ भारत को श्रेष्ठ भारत बनाने का संकल्प है। उन्होंने कहा कि भारत के पहले प्रधानमंत्री है, जिन्होंने एक एक योजनाओं के लिए जनता से सीधा संवाद स्थापित किया है।

उन्होंन कहा कि मोदी सरकार जो कहती है वह प्रमाणिकता के साथ करती है। मोदी की गारंटी की गाड़ी विकास की गारंटी लेकर आ रही। उन्होंने कहा कि झारखंड के भी गांव गांव,पंचायतों तक यात्रा जायेगी, जो अभी तक योजनाओं से वंचित है उन्हें कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ेगी। चाहे शौचालय निर्माण हो, प्रधानमंत्री आवास हो, आयुष्मान कार्ड योजना हो, उज्जवला गैस योजना हो, जनधन खाता हो, किसान सम्मान निधि हो, सारी योजनाओं से जो वंचित हैं वे जुड़ेंगे।

उन्होंने भाजपा कार्यकताओं और आम जनता से अनुरोध किया कि वे मोदी की गारंटी वाली गाड़ी का अपने अपने क्षेत्र में स्वागत करें और ऑन स्पॉट योजनाओं का लाभ प्राप्त करें।उन्होंने भाजपा कार्यकताओं से अधिक से अधिक लोगों तक मोदी की गारंटी पहुंचाने का आह्वान किया।

प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने कहा कि मोदी की गारंटी में अंत्योदय से सर्वोदय की गारंटी है। भारत मजबूत तभी होगा जब देश का गरीब, किसान, मजदूर, महिला, युवा सभी मुख्यधारा से जुड़ेंगे। उन्होंने कहा कि यही है सबका साथ सबका विकास। उन्होंने कार्यकताओं से विकसित भारत संकल्प यात्रा में मोदी की गारंटी गाड़ी से वंचितों को जोड़ने का आह्वान किया।

2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन की सरकार बनेगी : चिराग पासवान

रांची। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष और जमुई के सांसद चिराग पासवान ने शनिवार को रांची एयरपोर्ट पर पत्रकारों से बातचीत में कहा कि तीन राज्यों में भाजपा को मिली प्रचंड बहुमत यह बताती है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन की सरकार बनने जा रही है।

कांग्रेस सांसद धीरज साहू के विभिन्न ठिकानों पर आईटी रेड को लेकर चिराग ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में किसी भी भ्रष्टाचारी को छोड़ा नहीं जाएगा। नीतीश कुमार के झारखंड दौरे को लेकर चिराग ने कहा कि उनकी दाल बिहार में ही नहीं गलेगी, झारखंड तो दूर की बात है। नीतीश भले ही झारखंड आ रहे हैं लेकिन इसका असर यहां की जनता के ऊपर नहीं पड़ने वाला है।

टीएमसी की सांसद महुआ मोइत्रा को लोकसभा से निष्कासित किए जाने सवाल पर चिराग ने कहा कि संसद की गरिमा को जो भी भंग करेगा, उनपर कार्रवाई जायज है। झारखंड में विधानसभा चुनाव और लोजपा की भूमिका पर चिराग ने कहा कि पार्टी के कार्यकताओं का जो भी निर्णय होगा, उस पर विचार करेंगे। इसके बाद झारखंड के विधानसभा चुनाव में लोजपा चुनावी मैदान में उतरेगी।

एयरपोर्ट पर झारखंड के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र प्रधान के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में लोजपा (आर) के कार्यकताओं ने चिराग का स्वागत किया।

झामुमो प्रवक्ता का बयान चोरी और सीनाजोरी: प्रदीप वर्मा

रांची। भाजपा प्रदेश महामंत्री डॉ प्रदीप वर्मा ने शनिवार को झामुमो प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य के बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। वर्मा ने कहा कि कांग्रेस झामुमो में केवल सरकार चलाने का गठबंधन नहीं हुआ है, बल्कि एक दूसरे के भ्रष्टाचार पर हो रही कार्रवाई के खिलाफ भी बोलने का समझौता है।

उन्होंने कहा कि जब मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और झामुमो नेताओं के भ्रष्टाचार उजागर होते हैं तो कांग्रेस पार्टी उनके बचाव में आंदोलन करती है और जब कांग्रेस का मामला उजागर होता है तो झामुमो बचाव में आ जाता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस झामुमो की यह दोस्ती पुरानी है। लेनदेन का इतिहास पुराना है। वर्मा ने कहा कि झामुमो यह क्यों नहीं बता रहा कि आखिर किस कानून में 300 करोड़ से भी अधिक नकदी घर में रखने की इजाजत है?

उन्होंने कहा कि झामुमो की शर्म हया पहले ही खत्म हो चुकी है। भ्रष्टाचार कांग्रेस-झामुमो के डीएनए में शामिल है। उन्होंने कहा कि झामुमो प्रवक्ता खुद असमंजस में विरोधाभासी बयान दे रहे। एक तरफ कहते हैं जांच एजेंसी बताएगी तब मानेंगे।

दूसरी तरफ झारखंड में प्रमाणित दस्तावेजों के साथ ईडी ने कई बार एफआईआर करने के लिए पत्र लिखे हैं लेकिन मुख्यमंत्री कुंडली मारकर बैठे हैं।

धीरज साहू मामले में अनाप-शनाप बयानबाजी कर रही भाजपा : झामुमो

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने राज्यसभा सदस्य धीरज साहू मामले में भाजपा पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि जबतक आधिकारिक तौर पर सारी बातें सामने नहीं आ जाती, तब तक कुछ नहीं कहा जा सकता है लेकिन इस मसले पर लगातार भाजपा वाले अनाप-शनाप बयानबाजी कर रहे हैं। इस पूरे प्रकरण में एक नैरेटिव सेट करने की साजिश रची जा रही है।

सुप्रियो भट्टाचार्य शनिवार को पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह तो आईटी विभाग का यह रूटीन कार्य है। इससे पहले किसी उद्योगपति के यहां छापेमारी नहीं हुई है क्या। पैसा किसका है? कहां से आया है, ये सब आईटी के अधिकारी पता कर लेंगे। सुप्रियो ने सवाल करते हुए कहा कि आखिर भाजपा वालों को पेट में दर्द क्यों हो रहा है?

उन्होंने भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी पर निशाना साधते हुए कहा कि लगता है कि बाबूलाल को सब पता है कि किसका-किसका पैसा है और कहां से आया है। सुप्रियो ने कहा कि प्रधानमंत्री संवैधानिक दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं और संसद का सत्र भी चल रहा हैं लेकिन वे अखबार में प्रकाशित खबर को पोस्ट कर देते हैं और भाजपा के सारे नेता डमरू लेकर शुरू हो जाते हैं। इस प्रकरण को जबरदस्ती राजनीतिक रंग दिया जा रहा है।

धीरज साहू को गिरफ्तार कर केस ईडी को सौंपा जाए: सीपी सिंह

रांची। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य धीरज साहू के ठिकानों से 290 करोड़ से ज्यादा पैसे की बरामदगी के बाद विपक्षी दल भाजपा के नेता हमलावर हैं। रांची के भाजपा विधायक सीपी सिंह ने धीरज साहू को गिरफ्तार कर इस केस को ईडी को सौंपने की मांग की है। सीपी सिंह ने धीरज साहू की संसदीय भी सदस्यता खत्म करने की मांग की है। विधायक शनिवार को भाजपा महानगर कार्यालय में पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे।

सीपी सिंह ने कहा कि कांग्रेस पार्टी देश में भ्रष्टाचार के नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। उसके डीएनए में ही भ्रष्टाचार है। देश के इतिहास में पहली बार किसी छापेमारी में रिकॉर्ड नगद राशि की बरामदगी हुई है।कांग्रेस के नेता भ्रष्टाचार की प्रतियोगिता में लगे हैं। सीपी सिंह ने कहा कि कांग्रेस ने यह पैसे जरूर तीन राज्यों के चुनाव में विधायकों की खरीद फरोख्त और रिसार्ट पॉलिटिक्स के लिए रखा होगा। इसमें हेमंत सोरेन की भी हिस्सेदारी है। इस पूरे प्रकरण में झारखंड भी शर्मसार हुआ है।

झारखंड में महागठबंधन की सरकार भ्रष्टाचार की मशीन बन गई है: नीलकंठ मुंडा

खूंटी, । भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष और खूंटी के विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि झारखंड में महागठबंधन की सरकार भ्रष्टाचार की मशीन बन गई है। विधायक ने शनिवार को भाजपा के जिला कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फेंस में कांग्रेस सांसद धीरज साहू के ठिकानों से 300 करोड़ से अधिक नगद राशि मिलने के संबंध में कहा कि घोटालों में मिले सारे रुपये जनता के है। यह जनता के खून-पसीने की गाढ़ी कमाई है, जिसे गठबंधन के नेता हथियाए बैठे हैं।

प्रदेश उपाध्यक्ष ने कहा कि सरकार ने चुनाव से पूर्व यह कहा था कि महागठबंधन की सरकार जनता के लिए काम करेगी, लेकिन सरकार बनने के बाद सारे सत्ताधारी अपने लिए काम करने लगे। ये जनता के पैसों को लूटकर इकट्ठा कर रहे हैं, जिसकी जितनी भी निंदा की जाए कम है। चुनाव पूर्व इनका कथन साफ-सुथरी सरकार की थी, लेकिन करनी भ्रष्टाचार वाली निकली।

प्रदेश उपाध्यक्ष नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि आज इस मुद्दे पर महागठबंधन के नेता खामोश क्यों हैं। उन्हें बताना चाहिए कि जनता का यह पैसा उनके नेता की झोली में कैसे आया, लेकिन महागठबंधन के नेताओं की चुप्पी इस घोटाले में उनकी संलिप्तता को सार्वजनिक कर रही है।

देश का कोई गरीब भूखा नहीं रहेगा, यह मोदी की गारंटी है: अर्जुन मुंडा

खूंटी (झारखंड),। जनजातीय मामलों के केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने शनिवार को अपने संसदीय क्षेत्र के रनिया प्रखंड के मनहातू रायटोली टोंगरी पर 41 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय के निर्माण की आधारशिला पूजा-अर्चना के बाद नारियल फोड़कर रखी।

मौके पर केंद्रीय मंत्री प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत रनिया प्रखंड में बनने वाली पांच सड़कों और और दो पुल तथा मुरहू प्रखंड में पुल निर्माण कार्य का भी शिलान्यास किया। कार्यक्रम स्थल पर केंद्रीय मंत्री ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत आयोजित वीडियो कान्फ्रेंसिंग में भाजपा कार्यकताओं के साथ भाग लिया।

मौके पर आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए खूंटी के सांसद अर्जुन मुंडा ने कहा कि यह हम सबका सौभाग्य है कि इतने मनोरम स्थल पर बैठकर हम विकसित भारत संकल्प यात्रा के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री के साथ सीधा संवाद में शामिल हुए। यहां आज एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय का भी शिलान्यास हो रहा है। अभी हम सबने प्रधानमंत्री को सुना कि हम विकसित भारत के एम्बेसडर बनें, विकसित भारत के सहभागी बने। सहभागी इस तरह बनें कि सरकार की योजनाओं को घर-घर तक पहुचाएं।

उन्होंने कहा कि कोरोना काल में केंद्र सरकार ने गरीबों के लिए मुफ्त राशन की योजनाएं शुरू की, महिलाओं के लिए उज्ज्वला योजना सहित किसानों और गरीबों के लिए कई योजनाएं चला रही हैं। उन्होंने कहा कि हम अपने परिवार को आत्मनिर्भर बनाएंगे। इस देश में जब हमारे बच्चे अच्छी तरह शिक्षित होंगे, तो 2047 को विकसित भारत बनाने में हमारा भी योगदान होगा। हम सभी नागरिक अपने परिवार को समृद्ध बनाएंगे, तभी पूरा देश विकसित होगा।

मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर 15 नवंबर को खूंटी से विकसित भारत संकल्प यात्रा की शुरूआत की थी।

उपराष्ट्रपति के आगमन को लेकर जिला पुलिस ने की सभी तैयारियां पूरी

जमशेदपुर(

जमशेदपुर में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के आगमन को लेकर जिला प्रशासन पूरी तैयारी कर ली है। उपराष्ट्रपति एक्सएलआरआई की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने पर प्लैटिनम जुबली समारोह में शामिल होने शहर आ रहे हैं. यह समारोह 10 दिसम्बर को होना है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ रविवार को दोपहर दो बजे एक्सएलआरआई पहुंचेंगे। इससे पहले वे विशेष विमान से रांची एयरपोर्ट पहुंचेंगे। इसके बाद उपराष्ट्रपति जमशेदपुर के लिए रवाना होंगे। इस दौरान उनके साथ झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन, टाटा स्टील लिमिटेड के सीईओ सह एमडी टीवी नरेंद्रन, एक्सएलआरआई के डायरेक्टर फादर एस जॉर्ज फर्नांडिस भी मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम के वे सोनारी एयरपोर्ट रवाना हो जाएंगे। इस कार्यक्रम को लेकर जिला प्रशासन तैयारी में जुटा हुआ है। शनिवार को उपायुक्त, एसएसपी समेत जिला प्रशासन के अधिकारियों ने एक्सएलआरआई मैदान में बैठक कर कार्यक्रम में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर रणनीति बनाई।.ड्यूटी में तैनात रहने वाले जवानों और पदाधिकारियों को जरूरी दिशा निर्देश दिए।

सार-संक्षेप

ट्रैफिक के कारण किशोरगंज में मुख्यमंत्री के काफिले पर लगा ब्रेक

रांची। शहर के अति व्यस्ततम सड़क और संवेदनशील किशोरगंज चौक से ठीक पहले मुख्यमंत्री के काफिले को ब्रेक लगाना पड़ा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन शनिवार शाम को देवघर से बिरसा मुंडा एयरपोर्ट लैंड करने के बाद मुख्यमंत्री आवास के लिए रवाना हुए थे। जैसे ही उनका काफिला हरमू मुक्तिधाम से आगे बढ़ा सड़क जाम थी। ट्रैफिक बाधित रहने के कारण मुख्यमंत्री के काफिले को ब्रेक लगानी पड़ी। मुख्यमंत्री की सुरक्षा में तैनात अधिकारी दौड़ पड़े, जिसके बाद किशोरगंज ट्रैफिक पोस्ट पर तैनात ट्रैफिक के जवान भी हरकत में आए और जाम हटवाया। इसके बाद काफिले को गंतव्य के लिए रवाना किया गया।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 95 हजार से अधिक वादों का निपटारा, 444 करोड़ से अधिक की वसूली

रांची। झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यपालक अध्यक्ष जस्टिस एस. चंद्रशेखर के निर्देश पर शनिवार को रांची सिविल कोर्ट में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजक किया गया। इसका उद्घाटन प्रधान न्यायायुक्त अरुण कुमार राय समेत अन्य न्यायाधीशों ने बार के पदाधिकारियों की मौजूदगी में किया।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 95 हजार से अधिक वादों का निष्पादन किया गया। साथ ही 444 करोड़ से अधिक रुपये की समझौता राशि की वसूली हुई, जिसमें प्रीलिटिगेशन एवं लिटिगेशन के वादों का निष्पादन सम्मिलित है। लोक अदालत के आयोजन के पूर्व झालसा के निर्देश पर रांची के सभी प्रखंड के लिगल-एड-क्लिनिक में मेगा इंपावरमेंट कैंप का आयोजन भी किया गया था। मेगा इंपावरमेंट कैंप के दौरान जिला प्रशासन, रांची के सहयोग से 7,97,325.00 लाभुकों के बीच 150,69,94,095 रुपये की परिसंपत्तियों का वितरण भी किया गया।

बाबूलाल मरांडी ने धीरज साहू पर मुकदमा दर्ज कर उनकी गिरफ्तारी की मांग की

रांची। कांग्रेस से राज्यसभा के सदस्य धीरज साहू के विभिन्न ठिकानों से 300 करोड़ से ज्यादा नकदी की बरामदगी पर शनिवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने रांची में पत्रकार वार्ता कर कांग्रेस-झामुमो पर कड़ा प्रहार किया। साथ ही यह धनराशि कांग्रेस के शीर्ष नेताओं एवं मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का बताते हुए धीरज साहू पर मुकदमा दर्ज कर उनकी गिरफ्तारी की मांग की।

प्रदेश के सभी जिलों में भी भाजपा के विधायकों ने पत्रकार वार्ता कर प्रदेश अध्यक्ष की मांगों को दोहराया तथा कांग्रेस झामुमो के भ्रष्टाचार में लिप्त होने के इतिहास को उजागर किया। रविवार को सभी जिला मुख्यालयों में पार्टी के द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ आक्रोश प्रदर्शन आयोजित किया गया है।

कांग्रेस कार्यकताओं की बैठक में सांगठनिक मुद्दों पर चर्चा

खूंटी। खूंटी जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रवि मिश्रा की अध्यक्षता में शनिवार को पूर्व विधायक कालीचरण मुंडा जी के आवासीय कार्यालय में एक विशेष संगठनात्मक बैठक का आयोजन किया गया। इसमें जिला प्रभारी सुरेश बैठा ने कांग्रेस कमेटी के सदस्यों के अलावा आदिवासी कांग्रेस, महिला कांग्रेस, यूथ कांग्रेस, अनुसूचित जाति कांग्रेस, अल्पसंख्यक विभाग कांग्रेस के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कांग्रेस नेताओं को निर्देश दिया कि सभी प्रकोष्ठों के अध्यक्ष जल्द से जल्द प्रखंड स्तर तक की कमेटी की जानकारी उपलब्ध करायें।

जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा ने भी सभी प्रकोष्ठ के अध्यक्षों से कहा कि वे अपनी पूर्ण कमेटी की सूची जल्द से जल्द जिला कार्यालय को उपलब्ध करायें। मौके पर देवजीत देवघरिय, रविकांत मिश्रा, कैंसर खान, सुनीता गोप, क्रिस्टीना बारला, अजय कुमार गुप्ता, बबलू, विलसन तोपनो, जॉन कंडुलना, आदित्य गौझू, अशोक राम आदि मौजूद थे।

कडरू पेरिश ने लगाया सहायतार्थ शिविर

रांची। सीएनआई हॉली ट्रिनिटि चर्च कडरू पेरिश की ओर से शनिवार को खूँटी के सुदूर गाँव सैदबा डौडीह में सहायता शिविर लगाया गया । इस शिविर में तीन गाँव के सौ परिवारों को अनाज, कंबल एवं वस?त्र प्रदान किये गये ।

अनाज के रूप में आटा, तेल, दाल, चीनी, बिस?कुट ,साबुन, नमक, चायपत्ती आदि प्रदान किये गये। साथ ही बच?चों से लेकर बड़ों तक के बीच वस?त्रों का वितरण किया गया ।

शिविर को सफल बनाने में रेव?ह सिकन?दर नाग, प्रवीण तिर्की, अनहिरण कुजूर, मनोज तिग?गा, अनुज तिग?गा, मनोहर तोपनो, नोवेल कच?छप, जसमीन टोप?पो, स?नेहलता कुजूर, मेडलीन तिर्की, रीता हेमरोम, माइकल पन?ना आदि पेरिश सदस?यों का मुख?य योगदान रहा ।

एच.ई.सी. के आठ श्रमिक संघों ने सरयू राय को मजदूरों की आवाज बनने हेतु किया अनुरोध

एचईसी के बेहतर प्रबंधन एवं आर्थिक सुदृढ़ीकरण हेतु सौंपा 12 सूत्री मांग पत्र/सुझाव

राँची, एच.ई.सी. बचाओ मजदूर जन संघर्ष समिति के संयुक्त बैनर तले एच.ई.सी. के आठ श्रमिक संघ जिसमें हटिया मजदूर युनियन (सीटू), हटिया मजदूर लोकमंच, हटिया प्रोजेक्ट वकर्स यूनियन (इंटक) एच.ई.सी.लि. श्रमिक कर्मचारी यूनियन, हटिया कामगार यूनियन (एआईटीयूसी) एच.ई.सी. श्रमिक संघ, जनता मजदूर यूनियन, एच.ई.सी. सप्लाई संघर्ष समिति के प्रतिनिधियों ने जमशेदपुर के विधायक, सरयू राय से आज दोपहर उनके सरकारी आवास में मिले। सभी श्रमिक यूनियन के प्रतिनिधियों ने श्री राय को अपनी पीड़ा बताई और अपने संघर्ष में मजदूरों की आवाज बनने हेतु अनुरोध किया।

सरयू राय ने एच.ई.सी. बचाओ मजदूर जनसंघर्ष मोर्चा के पदाधिकारियों की बातों को ध्यानपूर्वक सुना और उनसे कहा कि आपकी मांगे वाजिब है और मजदूरों को उनका हक दिलाने हेतु मैं हरसंभव प्रयास करूंगा।

मुख्यमंत्री बाबा मंदिर में पूजा अर्चना की

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन बाबा मंदिर पहुंचे अपने दो दिवसीय देवघर के दौरान दूसरे दिन मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन देवघर में बाबा बैद्यनाथ मंदिर में वैदिक मंत्रोचार के बीच विधि- विधान से भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक और पूजा अर्चना कर राज्य की उन्नति, अमन -चैन, सुख- शांति -समृद्धि और राज्यवासियों की खुशहाली और उत्तम स्वास्थ्य की कामना की पूजा अर्चना करने बाबा मंदिर पहुंचे मंदिर प्रशासन और तीर्थ पुरोहित समाज द्वारा उन्हें स्वागत किया गया । तीर्थ पुरोहितों द्वारा मुख्यमंत्री को संकल्प कराया गया । फिर गर्भ गृह ले जाकर बाबा बैद्यनाथ का जलाभिषेक और पूजन कराया लगभग 10 मिनट मंदिर परिसर में रहने के बाद मुख्यमंत्री वापस परिषद लौटे । बाबा बैजनाथ से मुख्यमंत्री ने देश की खुशहाली अमन चैन और झारखंड राज्य की खुशी और उन्नति की कामना की । मुख्यमंत्री के साथ पार्टी के नेता और झारखंड सरकार के सचिव एवं कृषि मंत्री बादल पत्रलेख भी मौजूद थे मंदिर परिसर में तीर्थ पुरोहित समाज द्वारा मुख्यमंत्री को सम्मानित किया गया ।

संक्षिप्त समाचार

मंत्री से बंद जलापूर्ति योजना को चालू कराने की मांग

डुमरी। जिप सदस्य सुनीता कुमारी ने स्थानीय विधायक सह सुबे के उत्पाद एवं मद्य निषेध मंत्री बेबी देवी को एक पत्र सौंप कर जामतारा डुमरी ग्रामीण जलापूर्ति योजना का जीर्णोद्धार कराने की अपील की है।जिप सदस्या ने पत्र में लिखा है कि जामतारा डुमरी ग्रामीण जलापूर्ति योजना बीते कुछ माह से बंद है,उक्त योजना की टंकी,सप्लाई पाईप,कुआं तथा पंप सेट खराब एवं जर्जर हो चुकी है जिस कारण इस योजना से जुड़े क्षेत्र के लोगो को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है।इसके साथ पेयजल लाभुकों को काफी परेशानी हो रही है।

जिप सदस्या ने ग्रामीण जलापूर्ति योजना को जनहित में जीर्णोद्धार करने की अपील की है।

बच्चों को पौष्टिक आहार के साथ अच्छे संस्कार भी दें : महेंद्र

नावाडीह। नावाडीह प्रखंड अंतर्गत दहियारी पंचायत के पुरानी दहियारी ऊपर टोला स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 213 में जिप सदस्य महेंद्र प्रसाद ने कुल 25 बच्चे बच्चियों के बीच स्वेटर वितरण किया। उन्होंने कहा कि इन नौनिहालों को पौष्टिक आहार देने और खेल खेल में प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के साथ साथ अच्छे संस्कार देने का दायित्व आंगनबाड़ी सेविका सहायिका सहित हम सबों का है। यही बच्चे आगे बढ़ कर अच्छे नागरिक व देश के कर्णधार बनेंगे।

मौके पर मुखिया धनेश्वरी देवी,सेविका ममता देवी, सहायिका मंजूदेवी, सामाजिक कार्यकर्ता घनशयाम पंडित,कालीचरण साह आदि मौजूद रहे।

लापरवाही को यह थानेदार नप गए

गिरिडीह। गिरिडीह के आरक्षी अधीक्षक दीपक कुमार शर्मा ने साइबर अपराधियों के खिलाफ अभियान में लापरवाही बरतने के आरोप में अहिल्यापुर थाना प्रभारी संतोष मंडल को निलंबित कर दिया। मिली जानकारी के मुताबिक एसपी की ओर से थाना प्रभारी संतोष मंडल को अपने क्षेत्र में साइबर अपराधियों के खिलाफ अभियान चलाने का लगातार निर्देश दिया जा रहा था। लेकिन उन्होंने इस पर ठीक से अमल नहीं किया। साइबर अपराध से जुड़े कुछ मामलों के अनुसंधान में लापरवाही की शिकायते भी कुछ दिनों से मिल रही थी। इस बीच एसपी ने जिले के गांडेय, अहिल्यापुर, बेंगाबाद और सरिया थाना पुलिस को भी इस संबंध में कड़ा निर्देश दिया है।

होसिर में हाई मास्ट लाइट का विधायक ने

गोमिया। प्रखंड के होसिर मध्य विद्यालय मैदान में ओएनजीसी के सीएसआर मद के तहत लगने वाले 6 हाई मास्ट लाइट का भूमिपूजन शनिवार को गोमिया विधायक डॉ लम्बोदर महतो ने किया। इस अवसर पर विधायक डॉ महतो ने कहा कि होसिर मध्य विद्यालय मैदान पर हाई मास्ट लगाने की मांग यहां के स्थानीय लोगो के द्वारा बराबर की जा रही थी और ग्रामीणों के इस मांग को देखते हुए उन्होंने ओएनजीसी के परिसम्पत्ति प्रबंधन से बात कर इस मैदान पर हाई मास्ट लाइट लगाने का अनुरोध किया था।ओएनजीसी प्रबंधन ने भी उनके बातों पर संज्ञान लेते हुए होसिर स्कूल मैदान के लिए 6 हाई मास्ट लाइट तत्काल उपलब्ध करा दिया है, जो दिल्ली के सेंटर फॉर सोसिओ इकनॉमिक एंड पोलिटिकल रिसर्च नई दिल्ली संस्था के तत्वावधान में लगाया जायेगा।उन्होंने कहा कि इस मैदान पर हाई मास्ट लाइट के लग जाने से यहां रात्रि के समय मे भी खेलो का आयोजन हो सकेगा,साथ ही बुजुर्ग एवं महिलाओं के लिए भी यहां सुबह मॉर्निंग वॉक करने में भी सुविधा मिल सकेगी। वहीं पूर्व मुखिया घनशयाम राम ने कहा कि होसिर मध्य विद्यालय मैदान आसपास के कई पंचायतों का इकलौता मैदान है।इस मैदान पर समय समय पर कई खेलो का आयोजन होते रहता है।उन्होंने कहा कि रात्रि समय मे भी इस मैदान पर खेलो का आयोजन हो इसे देखते हुए हम सभी ग्रामीणों ने स्थानीय विधायक से यहां हाई मास्ट लगाने का अनुरोध किया था और आज ग्रामीणों की मांग को देखते हुए विधायक डॉ महतो ने हाई मास्ट लाइट का भूमिपूजन किया है। मौके पर संस्था के फरहान आलम, मुखिया सावित्री देवी, पंसस गीता देवी, मोहन नायक,कुंदन कुमार, रंजीत साव,सुधीर ठाकुर, रामदास राम,सोहित प्रसाद,चितरंजन सिंह, महेंद्र तिवारी, विक्रम साव,विकाश शर्मा आदि मौजूद थे।

इसरी एनएच में यात्री शेड जरूरी : देवेश देव

डुमरी। क्षेत्र के शिक्षाविद देवेश कुमार देव ने इसरी बाजार के पास एनएच में एक यात्री शेड निर्माण की मांग की है।उन्होंने कहा है कि इसरी बाजार के लोगों को धनबाद और हजारीबाग जाने वाली दिशा के लिए यात्री वाहन को पकड़ने के लिए यात्री कलाली रोड से गुजरकर राजपथ पर आना पड़ता है।अपने वाहनों के इंतजार में बहुत सारे लोग प्रतिदिन दिखाई देते हैं।कहा कि एनएच-19 का निर्माण कार्य पूर्ण हुए दो वर्ष से अधिक हो गये लेकिन यात्री की सुविधाओं पर ध्यान न तो एनएचएआइ की अधिकृत कंपनी ने दिया और ना ही यहां के जनप्रतिनिधियों और प्रशासन ने।कड़ी धूप, बारिश और तेज हवाओं में बिना किसी छत के वाहनों का इंतजार कठिन हो जाता है।

खिजुरिया मैदान देवघर में आपकी योजना- आपकी सरकार- आपके द्वार के चल रहे तीसरे चरण के तहत आयोजित किया

देवघर/झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

खिजुरिया मैदान के गौरीपुर पंचायत में आयोजित सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में पहुंचे सीएम इस अवसर पर उन्होंने लगभग 282 करोड़ रुपए की विभिन्न योजना का शिलान्यास किया जिसमें कई सड़क और पूल पुलिया शामिल है। वहीं मौके पर लगभग 60 करोड़ रुपए की परिसम्पत्तियों का वितरण भी किया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि पूरे राज्य के बुजुर्गों सहित अन्य वर्गों के लोगों को भी पेंशन प्राप्त हो रहा है। पूर्व में यही बुजुर्ग पेंशन के लिए दलालों के चक्कर में फंसे हुए थे। हमने बुजुर्गों को सहारा दिया उनके हाथों में लाठी दी।पिछली सरकारों ने डबल इंजिन की सरकार का नाम देकर दोनों हाथों से इस राज्य को लूटने का काम किया है। दूसरे कई राज्यों में 400 और 500 रु पेंशन मिलता है पर हम एक हजार रुपए पेंशन दे रहें हैं।विशेष रूप से कमजोर जनजाति समूहों के युवाओं को प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी हेतु निःशुल्क आवासीय कोचिंग प्रदान किया जा रहा है,ताकि वे भी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होकर देश और राज्य की सेवा कर सकें। निजी स्कूलों की तरह ही अब सरकारी स्कूलों का भी निर्माण करवाया जा रहा है ताकि गरीब के बच्चों को भी उच्च स्तरीय शिक्षा मिले। गरीबों के पास टूटा फूटा मिट्टी का घर है उनके लिए हमने अपनी आवास योजना अबुआ आवास योजना की शुरुवात की है। मौके पर उपस्थित अन्य मंत्रियों ने भी सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की खूब बखान किया।कार्यक्रम को लेकर भव्य पंडाल का निर्माण करवाया गया था । जिसमें लोगों की अच्छी भीड़ दिखी। कार्यक्रम के दौरान मौके पर सूबे के श्रम नियोजन मंत्री सत्यानन्द भोक्ता,बादल पत्रलेख,हफ़ीज़ुल हसन,आलमगीर आलम,सांसद विजय हांसदा,विधायक प्रदीप यादव,पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शशांक शेखर भोक्ता,उदय शंकर सिंह,पूर्व मंत्री सुरेश पासवान, बिस सूत्री उपाध्यक्ष मुन्नम संजय सहित इंडिया गठवन्धन पार्टी के सभी जिला अध्यक्ष सहित हजारों की संख्या में आमजन मौजूद थे। जहां उन्होंने जिला के कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में उपस्थित होकर संगठन की मजबूती के लिए कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं उन्होंने सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को जन जन तक पहुंचाने की बात कही।

सोना-सोबरन धोती साड़ी योजना का शत प्रतिशत वितरण हेतु जिला आपूर्ति पदाधिकारी ने किया समीक्षात्मक बैठक

जामताड़ा। नारायणपुर प्रखंड सभागार में शनिवार को प्रखंड क्षेत्र के जन वितरण प्रणाली के दुकानदारों के साथ जिला आपूर्ति पदाधिकारी कीर्तिबाला लकड़ा ने शत प्रतिशत सोना सोबरन धोती साड़ी का वितरण हेतु समीक्षात्मक बैठक किया उक्त बैठक में 2 दिन के अंदर समुचित वितरण करने का निर्देश दिया। साथ ही कहा वितरण में किसी प्रकार की समस्या हो तो सीधे जिला से संपर्क कर सकते हैं हर संभव मदद किया जाएगा परंतु वितरण में लापरवाही बरतने वाले डीलरों के ऊपर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही निर्देश दिया कि सभी डीलर शत प्रतिशत वितरण करना सुनिश्चित करेंगे वहीं मौके पर नारायणपुर प्रखंड विकास पदाधिकारी सह प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी मुरली यादव ने प्रखंड क्षेत्र के डीलरों से धोती साड़ी वितरण की रिपोर्ट मांगी और अभिलंब सत प्रतिशत वितरण करने का आदेश दिया। वहीं मौके पर गोदाम प्रबंधक भगवत मंडल, सरफुद्दीन अंसारी, राजेन मंडल के अलावे दर्जनों डीलर उपस्थित थे।

विधायक व उपायुक्त ने किया सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का शुभारंभ

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

ईचागढ़ । सरायकेला- खरसावां जिला के कुकडु प्रखंड के चौड़ा पंचायत में शनिवार को आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विधायक सविता महतो, उपाध्यक्ष रवि शंकर शुक्ला एवं चांडिल अनुमंडल पदाधिकारी गिरजा शंकर महतो ने दीप प्रज्वलित कर किया। वहीं विधायक एवं उपायुक्त व अनुमंडल पदाधिकारी ने स्टालों का निरीक्षण भी किया। इस दौरान अपने संबोधन में विधायक सविता महतो ने लोगों को सरकार द्वारा चलाये जा रहे जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी और सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के माध्यम से सरकार के योजनाओं का लाभ सुयोग्य लोगों को लेने की अपील किया। इस दौरान विधायक सविता महतो ने बुजुर्ग महिलाओं के बीच कंबल सहित कई परिसम्पतियों का भी वितरण किया। वहीं उपायुक्त रवि शंकर शुक्ला ने पंचायत के उपस्थित लोगों को सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं का लाभ लेने के लिए जागरूक होकर आगे आने का अपील किया। उन्होंने कहा कि आबुआ आवास का आवेदन जरूर करें और इसका लाभ उठाएं। उन्होंने कहा कि सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में अधिक से अधिक आवेदनों पर त्वरित कार्रवाई किया जा रहा है और बचे हुए आवेदन पर भी कार्रवाई की प्रक्रिया जारी है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के द्वारा कुल 22 स्टॉल लगाया गया था। जहां चौड़ा पंचायत के काफी संख्या में लोग उपस्थित हुए। कार्यक्रम में कई चयनित लाभुकों के बीच पेंशन स्वीकृति पत्र वितरण,जॉब कार्ड वितरण, सखी मंडल से जुड़े महिलाओं के बीच सीसीएल चेक वितरण, फूलों झानो आशीर्वाद योजना के तहत चेक वितरण, दिव्यांगों के बीच ट्राई साइकिल सहित दर्जनों लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का भी वितरण किया गया।चौड़ा पंचायत में आयोजित सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में जिसमें पैंशन,आय ,आवासीय,जाति आवेदनों पर कारवाई किया गया। जिसमें बचे आवेदनों का त्वरित निष्पादन किया जाएगा । इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी राकेश गोप ,विधायक के आप्त सचिव काबलु महतो, स्नेहा महतो,जन सेवक धनराज महतो, बीपीओ राम लगन उरांव, जेई भोलानाथ महतो आदि काफी संख्या में पंचायत के लोग उपस्थित थे।

किसान परेशान,45-50 हाथीयों ने खेतों व खलिहानों में धानों को बनाया निवाला

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

ईचागढ़ । सरायकेला-खरसावां जिला के ईचागढ़ प्रखंड क्षेत्र के डुमरा, पुड़ीहेंसा, सालुकडीह, पिलीद आदि गांवों में हाथियों का कहर जारी है। आए दिन हाथीयों का झुंड जान माल की क्षति पहुंचाने के साथ ही खेत खलिहानों में जाकर धानों को रौंदकर नष्ट कर रहा है। किसान एक साथ खराब मौसम और हाथीयों की कहर से जुझ रहे हैं। वहीं शनिवार की अहले सुबह 45-50 की संख्या में डुमरा, पुड़ीहेंसा व सालुकडीह में खेतों में कटे व खड़े धानों को रौंदकर नष्ट कर दिया। डुमरा गांव के सीताराम पातर का चौकबंदी खेतों में करीब 6 एकड़ में कटे व खड़े धानों को मसलकर व रौंदकर नष्ट कर दिया। वहीं हाथीयों ने शांति पातर, सुनीता पातर,कालीनाथ सिंह मुण्डा, चांदमनी देवी, सत्यवती सिंह मुण्डा, पुड़ीहेंसा के चौदधरी महतो सहित दर्जनों किसानों के खेतों व खलिहानों में रखे धानों को रौंदा। बताया जा रहा है कि पिलीद व बड़ा चुनचुडीया के पास झाड़ी जंगलों में करीब 50 हाथी डेरा जमाया हुआ है। किसान दिन को अपने खेतों में धानों को काटने व समेटने में व्यस्त हैं, वहीं रात को हाथीयों से अपने खेतों को बचाने में रात जगा कर रात गुजारने में मजबूर हैं। दिनों दिन हाथियों का समस्या एक विकराल रूप ले रहा है। रात को एक दुसरे गांवों में आने-जाने के लिए भी सोचना पड़ता है। वनरक्षी कैलाश महतो ने भी गांव पहुंचकर क्षति का आकलन कर फार्म भरने को कहा। वहीं सुनीता पातर ने बताया कि आज सुबह करीब 2 ढाई बजे 45-50 हाथियों ने डुमरा गांव में आकर खेतों में खड़े व कटे धानों को रौंद दिया। उन्होंने कहा कि हमारे ही 6 एकड़ में लगे धानों को रौंद कर नष्ट कर दिया। उन्होंने कहा कि वन विभाग से मांग है कि हमें उचित मुआवजा दिया जाए, ताकि अपना क्षति का भरपाई हो सके । उन्होंने कहा कि हमारी साल भर का कमाई व मेहनत बेकार हो गया।

रेड क्रॉस सोसायटी के 10 पदों हेतु 208 मतदाता देंगे वोट

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

गिरिडीह। रेडक्रॉस सोसायटी गिरिडीह के विभिन्न पदों हेतु आगामी 17 दिसंबर को होने वाले चुनाव को लेकर प्रत्याशियों की सरगर्मी तेज हो गई है। इससे पूर्व सदर एसडीएम सह रेडक्रॉस के उपाध्यक्ष विशालदीप खलखो के द्वारा सभी प्रत्याशियों की उपस्थिति में नामांकन प्रपत्र की स्कूटनी की गई। स्कूटनी के दौरान सभी नामाकंन पर्चे सही पाये गए।स्क्रूटनी प्रकिया पूरी होने के बाद सभी प्रत्याशी अपने पक्ष में मतदान को लेकर मतदाताओं के बीच जन संपर्क बनाने में जूट गए हैं। इस चुनावी प्रक्रिया में रेडक्रॉस से जूड़े कुल 208 मतदाता अपने मतदाधिकार का प्रयोग करेंगे। ज्ञातव्य हो कि रेडक्रॉस चुनाव को लेकर नामांकन की अंतिम तिथि 6 दिसंबर को थी जबकि 7 दिसंबर को नाम वापसी की तिथि थी। इस दौरान रेडक्रॉस के चैयरमेन, वाइस चैयरमेन, सचिव, सहसचिव, कोषाध्यक्ष सहित कुल दस कार्यकारिणी पदों हेतु कुल 16 प्रत्याशियों ने नामांकन पर्चा भरा।

37 बच्चों को किया गया गर्म वस्त्र का वितरण

नावाडीह। प्रखंड अंतर्गत बाराडीह पंचायत के उत्क्रमित मध्य विद्यालय बोदरो में मुखिया प्रदीप कुमार वर्मा एवं पंचायत समिति सदस्य गायत्री देवी ने कक्षा एक एवं दो के कुल 37 बच्चों के बीच स्वेटर का वितरण संयुक्त रूप से किया। वहीं मुखिया प्रदीप कुमार वर्मा ने कहा कि सरकारी विद्यालयों में सरकार की ओर से निःशुल्क पोषाहार, पोशाक,पुस्तक,छात्रवृत्ति आदि दी जाती हैं।इसलिए शिक्षकों और अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करें। यह उनका कर्तव्य बनता है। वहीं गायत्री देवी ने बच्चों से कहा कि वे हमेशा अपनी पोशाक साफ सुथरा रखें और प्रतिदिन नियमित रूप से विद्यालय आया करें। शिक्षाका जीवन में बहुत बड़ा महत्व है । मौके पर प्रधानाध्यापक नरेश कुमार पांडेय, प्रबंध समिति अध्यक्ष भोला प्रसाद कुर्मी, राजेंद्र कुमार स्वर्णकार, संजय कुमार ,विद्या कुमारी आदि उपस्थित थे।

देवघर के खिलाड़ी राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत रहे हैं

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

साइकलकोनिक बाधा के बावजूद इस आयोजन का सफल होने का पूरा का पूरा श्रेय सभी अधिकारी व आफिशियल बधाई के पात्र हैं अध्यक्ष सुनील खवाड़े, जिला ओलंपिक संघ । बिना इनके इतना बड़ा आयोजन संभव नहीं था। हमारी कोशिश रहती है कि किसी भी प्रकार की त्रुटि न हो। पिछले वर्ष की कमियों को दूर करने का प्रयास किया गया है। हालांकि फिर भी यदि कोई कमी रह गई हो तो वादा करता हूं कि अगले वर्ष कमी को पूरा किया जाएगा, मेरा वायदा है। देवघर खेल के मामले में बहुत उर्वरक भूमि है, इसे अच्छे से तराशने की जरूरत है। इतने बड़े आयोजन में जिला ओलंपिक संघ के सीईओ आशीष झा की सबसे बड़ी भूमिका है। यह देवघर खेल जगत के चाणक्य है। इनकी ही साधना का फल है कि देवघर के खिलाड़ी राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत रहे हैं। तमाम स्कूलों के प्रबंधक से मेरी गुजारिश है कि अगले वर्ष खिलाड़ियों की संख्या में अधिक से अधिक इजाफा करें। अगले वर्ष फिर से इसी वक्त हमलोग फिर मिलेंगे, यह मेरा वायदा है। स्कूल के शिक्षकों से आग्रह है अभी से अगले वर्ष की रणनीति पर काम करें।

जिला ओलंपिक संघ ने निश्चय किया है कि हमारे संघ का वेबसाइट लांच किया जाएगा। यह एक सुविधा डेस्क के रूप में काम करेगा। आयोजनों में शामिल होने के लिए बार बार चक्कर नहीं लगाना होगा।

एडिडास स्पोर्ट्स किट से नेशनल गेम्स की स्वर्ण पदक विजेता छोटी कुमारी को जिला ओलंपिक संघ के अध्यक्ष सुनील खवाड़े द्वारा भेंट किया गया। ज्ञात हो कि सुनील खवाड़े ने स्कूल ओलंपिक के ट्रॉफी अनावरण में घोषणा किया था जिसे उन्होंने आज पूरा किया। साथ ही उन्होंने आगे भी हर संभव मदद का आश्वासन दिया है। भेंट प्राप्त करने उपरांत छोटी ने उनके प्रति आभार प्रकट किया और सुनील खवाड़े के तारीफों के पुल बांधा। छोटी ने कहा कि आने वाले लॉन बाल एशियन चैंपियनशिप में देवघर को गौरवान्वित करने का पूरा प्रयास किया जाएगा।

- » बेस्ट मार्च पास्ट – आरकेवीवीएम, जसीडीह
- » सबसे अधिक प्रतिभागी – संत जेवियर्स हाइ स्कूल, सातर
- » सबसे अनुशासित टीम – संत मेरी गर्ल्स हाई स्कूल, देवघर
- » (कुल 49 पदक) आठ गोल्ड, आठ सिल्वर, 23 कांस्य पदक – आरकेवीवीएम (रनर–अप)
- » 23 गोल्ड, 15सिल्वर ,12 कांस्य (कुल 50पदक)
- » डिवाइन पब्लिक स्कूल, देवघर (विजेता)

● **पिछले बार डीएवी सातर था चैंपियन**

उपराष्ट्रपति के आगमन को लेकर युद्ध स्तर पर सड़क मरम्मत कार्य, झामुमो ने गुणवत्ता पर उठाए सवाल

निरसा। मैथन संजय चौक से टोल प्लाजा तक सड़क को ठीक करने के लिए स्काईलार्क कंपनी पूरी ताकत लगा दिया है। शनिवार को भारी मशीनों के सहयोग से सड़क को युद्ध स्तर पर दुरुस्त किया जा रहा था। ताकि सड़क को बेहतर बनाया जा सके और उपराष्ट्रपति का काफिला सुगमता से जा सके। वहीं झामुमो के प्रखंड अध्यक्ष रामनाथ सोरेन ने डीसी धनबाद को पत्र लिखकर रोड निर्माण में लगी कंपनी स्काईलार्क के विरुद्ध शिकायत किया है। कहा कि कंपनी के शिथिल कार्यों के कारण मैथन संजय चौक से मुगमा तक आए दिन जाम लग रही है एवं दुर्घटनाएं हो रही है। मांग किया है कि स्काईलार्क कंपनी के कार्य की गुणवत्ता की जांच हो ताकि रोड बेहतर ढंग से बने और समय पर पूरा हो सके। बता दें कि दो दिन की बारिश के दौरान मैथन टोल प्लाजा से संजय चौक बाईपास तक एनएच दो कीचड़ में तब्दील हो गया था। वहां से वाहन चलने के बजाय रेंग रहे थे।

महामारी में दिल्ली

दिल्ली में जन्म और मृत्यु दर को लेकर आंकड़े सामने आए हैं। इन आंकड़ों से पता चला है कि दिल्ली में जन्मदर फिर बढ़ी है। हालांकि अभी भी जन्मदर पिछले सालों के हिसाब से कम ही है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (CRS) की ओर से गुरुवार को जारी किए गए महामारी के दिनों वाले जन्म और मृत्यु से जुड़े आंकड़े हैरान तो नहीं करते, लेकिन इसके कई पहलुओं पर गौर किया जाना चाहिए।

» आंकड़ों की सीमाएं :

मगर उस तरफ बढ़ने से पहले यह देखना जरूरी है कि ये आंकड़े कई लिहाज से आधे-अधूरे कहे जाएंगे। CRS आंकड़े सिर्फ दर्ज किए गए जन्म और मौत की संख्या बताते हैं। इनसे यह पता नहीं चलता कि जन्म और मृत्यु की इस संख्या में बाहर से अस्थायी तौर पर आए लोगों और यहां के स्थायी निवासियों का क्या अनुपात है। इस अर्थ में सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (SRS) का सर्वे आधारित अनुमान बेहतर होता है जो रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया (RGI) जारी करता है। चूंकि RGI ने महामारी की अवधि यानी 2021-22 के रफ़ डेटा अभी जारी नहीं किए हैं, इसलिए फिलहाल उफ़र आंकड़ों से ही काम चलाना होगा।

» जन्म और मौत के बदलते आंकड़े :

कोरोना महामारी की अवधि यानी 2020 और 2021 में दिल्ली में दर्ज हुई मौतों की संख्या 28,687 बताई गई है, जो 2007 (जब से CRS रेकॉर्ड उपलब्ध हैं) से अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। जन्मदर का जहां तक सवाल है तो 2019 में यह प्रति हजार की आबादी पर 18.4 बच्चे की थी। लेकिन 2020 में 14.2 बच्चों पर और 2021 में और घटकर 13.1 पर आ गई। 2022 में बढ़कर 14.2 बच्चों पर आई। लेकिन महामारी से पहले के स्तर से काफी नीचे है। ध्यान रहे, दिल्ली में जन्मदर में कमी महामारी से पहले से ही आने लगी थी।

बढ़ोतरी की वजहें: जानकार जन्म दर में आई बढ़ोतरी के पीछे कुछ खास वजहें बता रहे हैं। एक तो लॉकडाउन के दौरान अपने गांवों को लौट चुके लोग स्थिति सुधरने पर बड़ी संख्या में वापस आ गए। दूसरे, लॉकडाउन के दौरान शुरू हुआ वर्क फ्रॉम होम का पैटर्न जारी रहना भी अहम है क्योंकि उससे महिलाओं को लगा कि वे वर्कफोर्स में भागीदारी करते हुए परिवार का भी ख्याल रख सकती हैं। मगर बड़ी बात यह है कि इन सबके बावजूद जन्म दर का स्तर नीचा बना हुआ है।

» जनगणना के आंकड़ों का इंतजार :

CRS के ये आंकड़े जहां स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कई पहलुओं पर रोशनी डालते हैं, वहीं यह भी बताते हैं कि जनगणना के विस्तृत आंकड़ों की कमी कितनी खलने वाली है। ऐसे में जरूरी है कि 2021 में होने वाली जनगणना की प्रक्रिया को और देर किए बगैर जल्द से जल्द पूरा कराने की कोशिश की जाए।

जजों की नियुक्ति पर विवाद, जाने भी दो यारो

जजों की नियुक्ति को लेकर केंद्र सरकार और सुप्रीम कोर्ट के बीच 1993 से लगातार तनाव बना हुआ है, जब शीर्ष अदालत ने इसका अधिकार कार्यपालिका से छीनकर कलीजियम को दे दिया था। यही तनाव हाल में फिर टकराव के रूप में सामने आया, जब सुप्रीम कोर्ट ने एडवोकेट असोसिएशन, बेंगलुरु की याचिका पर सुनवाई करते हुए सरकार के रवैये की तीखी आलोचना की। अदालत को शिकायत है कि जजों नियुक्ति और तबादले से जुड़ी उसकी सिफारिशों पर? सरकार अपनी सुविधा के अनुसार कार्रवाई करती है। यानी कुछ को मानती है, कुछ पर चुप बैठ जाती है।

संविधान सभा का रुख

जजों की नियुक्तियों को लेकर संविधानसभा में विस्तृत विचार-विमर्श हुआ था।

-संघीय संविधान समिति के गठन के तुरंत बाद सुप्रीम कोर्ट के गठन और उसकी शक्ति पर विचार करने के लिए एक विशेष समिति बनाई गई।

-फेडरल कोर्ट के पूर्व जज एस वर्दचारियार, अल्लादि कृष्णस्वामी अय्यर, बी एल मितर, के एम मुंशी जैसे जाने-माने विधिवेत्ता और बी एन राव जैसे संवैधानिक सलाहकार इसके सदस्य थे।

-समिति ने सुझाव दिया कि नियुक्ति का अधिकार पूरी तरह कार्यपालिका के हाथों में नहीं होना चाहिए।

-लेकिन अंततः संविधान सभा ने यह अधिकार सरकार को ही देना मुनासिब समझा।

-सुप्रीम कोर्ट के जजों की नियुक्ति के लिए देश के चीफ जस्टिस (CJI) और हाई कोर्टों के जजों के लिए CJI के अलावा संबंधित हाईकोर्ट के चीफजस्टिस और उस राज्य के राज्यपाल से परामर्श का प्रावधान किया गया।

1993 तक यह व्यवस्था चलती रही। कभी कोई बड़ी समस्या नहीं हुई। कुछेक मामलों को छोड़कर हमेशा CJI की सिफारिश मानी गई। 1993 में सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था दी कि जजों की नियुक्ति CJI और दो सबसे सीनियर जजों का कलीजियम करेगा। तभी से सरकार और सुप्रीम कोर्ट के बीच इस मुद्दे पर तनाव बना हुआ है।

-संसद की कुछ स्थायी समितियों ने कई बार 1993 से पहले की स्थिति को बहाल करने पर जोर दिया।

-2008 में न्यायमूर्ति ए आर लक्ष्मणन की अध्यक्षता वाले विधि

अदालत को शिकायत है कि जजों नियुक्ति और तबादले से जुड़ी उसकी सिफारिशों पर? सरकार अपनी सुविधा के अनुसार कार्रवाई करती है। यानी कुछ को मानती है, कुछ पर चुप बैठ जाती है।

आयोग ने भी ऐसी ही सलाह दी।

-वाजपेयी सरकार में नैशनल जुडिशल कमिशन के गठन के लिए विधेयक लाया गया, जो लोकसभा भंग होने के कारण पास नहीं हो पाया।

-2014 में 99वें संविधान संशोधन के जरिए राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग का गठन किया गया। इस विधेयक को संसद ने निर्विरोध पारित किया और 20 विधानसभाओं ने इसकी पुष्टि की। लेकिन सुप्रीम कोर्ट की एक संविधान पीठ ने इसे असंवैधानिक करार दिया।

दुनिया में कहीं भी जजों को जजों की नियुक्ति करने का अधिकार नहीं है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में निर्वाचित सरकार को जजों की नियुक्ति प्रक्रिया से पूरी तरह बाहर रखना अलोकतांत्रिक है। वैसे यह बात सही है कि सरकार आज सबसे बड़ी मुकदमेबाज है। यानी सबसे अधिक मामलों में वह एक पक्ष है। किंतु उच्च न्यायपालिका के न्यायाधीशों को पूर्ण सुरक्षा और स्वायत्तता मिली हुई है। एक बार नियुक्त होने के बाद सिर्फ महाभियोग के जरिए ही उन्हें हटाया जा सकता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि उन्हें कौन नियुक्त करता है।

तबादलों के बारे में भी संविधान में अनुच्छेद 222 में स्पष्ट प्रावधान है कि राष्ट्रपति CJI से परामर्श कर हाईकोर्ट के जजों का ट्रांसफर कर सकते हैं। 1975 तक इस प्रावधान का उपयोग बहुत कम किया गया। आपातकाल के दरम्यान हाईकोर्टों ने नागरिकों के मौलिक अधिकारों का मजबूती के साथ बचाव किया, जबकि सुप्रीम कोर्ट एक हद तक सरकार के सामने समर्पण कर चुका था। जून 1976 में अचानक 16 जजों का तबादला किया गया। इसे इस आधार पर चुनौती दी गई कि यह एक संवैधानिक पद है और जज किसी एक हाईकोर्ट के जज के रूप में शपथ लेता है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया कि हालांकि जज सरकारी मुलाजिम नहीं है, उसका तबादला किया जा सकता है, लेकिन उससे पहले मुख्य न्यायाधीश के साथ सलाह-मशवरा करना होगा।

1993 के फैसले का कोई संवैधानिक/कानूनी आधार नहीं है। न्यायपालिका ने विधायिका का काम किया और शक्ति अपने हाथ में ले ली। इसलिए यह सबसे ख़तरनाक फैसला माना जाता है। 1993 में केंद्र में गठबंधन की सरकार थी। ऐसी सरकार हमेशा कमजोर होती है। न्यायपालिका, चुनाव आयोग, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक जैसी स्वायत्त संस्थाएं ऐसे समय अक्सर अतिरिक्त सक्रियता दिखाने लगती हैं। जब एक दल के पास स्पष्ट बहुमत होता है और सरकार मजबूत होती है तो हालात अलग होते हैं। 1989 से 2014 तक भारत में गठबंधन सरकारें रहीं। इस दौरान न्यायिक सक्रियता शिखर पर रही। इसके कई अच्छे परिणाम भी मिले। लेकिन न्यायिक सक्रियता का एक हद से आगे जाना लोकतंत्र को चोटिल करता है।

गलत संदेश

दूसरी ओर स्वतंत्र न्यायपालिका भी लोकतंत्र का अटूट अंग है। इसके बिना लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती। एक सामान्य व्यक्ति सरकार से लड़कर जीत जाता है क्योंकि एक निष्पक्ष पंच है। इसलिए सरकार की जिम्मेदारी है कि हर हाल में न्यायपालिका की स्वायत्तता एवं मजबूती बनाए रखे। अभी तो आलम यह है कि सरकार बिना अवमानना याचिका दायर हुए किसी फैसले को लागू ही नहीं करती। ध्यान रहे, संविधान के अनुच्छेद 141 के तहत सुप्रीम कोर्ट का फैसला देश का कानून माना जाता है। 1993 का फैसला भले गलत हो, लेकिन वह भी देश का कानून है जिससे सरकार भी बंधी है। जाहिर है, कलीजियम की सिफारिशों पर सरकार का मौजूदा रुख गलत संदेश देता है। हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को संभवतः दोनों ही पक्षों से थोड़ी और जिम्मेदारी एवं परिपक्वता की उम्मीद है।

मोदी के चेहरे पर मिली जीत

अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों का सेमीफाइनल कहे जा रहे विधानसभा चुनावों के नतीजों ने कुछ बातें बिल्कुल साफ कर दी हैं। पहली, बीजेपी उत्तर भारत में बेहद ताकतवर है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता का कोई जवाब फिलहाल किसी के पास नहीं है। इन चुनावों में कांग्रेस ने प्रदेश नेताओं को तरजीह देने की रणनीति अपनाई थी, जबकि बीजेपी सभी राज्यों में कलेक्टिव लीडरशिप के आधार पर पीएम मोदी के चेहरे के भरोसे मैदान में उतरी थी।

चुनाव नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि आम वोटरों के बीच पीएम मोदी के नाम और चेहरे का सिक्का आज भी पहले की ही तरह चलता है। दूसरी, बीजेपी और कांग्रेस दोनों ने मुफ्त रेवड़ियों की घोषणा करने में उदारता दिखाई थी। लेकिन वोटरों ने कांग्रेस की गारंटी के बजाय मोदी की गारंटी को प्राथमिकता दी, जिससे साफ है कि मोदी के नाम की विश्वसनीयता कहीं ज्यादा है। तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि इन चुनावों में कांग्रेस का कास्ट सेंसस का कार्ड नहीं चला।

इस कार्ड की अहमियत इस बात से समझी जा सकती है कि बीजेपी भी इस मसले पर

दबाव में थी और रक्षात्मक मुद्रा में दिख रही थी। लेकिन चुनाव नतीजों से साफ हो गया है कि ओबीसी का सपोर्ट काफी हद तक बीजेपी के साथ बना हुआ है। ऐसे में आगामी लोकसभा चुनावों के लिहाज से यह मसला अपनी अहमियत खो चुका है। राज्यों की बात की जाए तो मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान को इस बात का श्रेय देना होगा कि मुख्यमंत्री उम्मीदवार नहीं बनाए जाने के बावजूद वह पूरे दम-खम से मैदान में डटे रहे और बड़ी जीत हासिल की। छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस सत्ता से बाहर जरूर हुई, लेकिन दोनों जगह इसने अच्छी फाइट दी। इस लिहाज से मानना होगा कि सत्ता गंवाने के बाद भी कांग्रेस दोनों राज्यों में काफी हद तक अपनी जमीन बचाए हुए है। कांग्रेस नेतृत्व के लिए बुरी बात यह है कि वह छत्तीसगढ़ में अपनी जीत मानकर चल रही थी और कई हलकों में भी ऐसे ही दावे किए जा रहे थे, लेकिन राज्य में बीजेपी का जमीनी स्तर पर कैंपेन काम आया।

तेलंगाना में कांग्रेस को शानदार जीत मिली है। वहां छह महीने पहले तक उसे मुकाबले में भी नहीं माना जा रहा था। मगर क्षेत्रीय पार्टी बीआरएस को उसने बुरी तरह पराजित कर दिया। ऐसे में यह सवाल खासा अहम हो गया है कि इंडिया गठबंधन यहां से किस तरह आगे बढ़ेगा। क्या उसमें शामिल अन्य क्षेत्रीय पार्टियां कांग्रेस को अपने लिए चुनौती के रूप में देखेंगी? क्या प्रतिकूल चुनाव नतीजों से कांग्रेस को लगा झटका उसे अन्य सहयोगी दलों के लिए ज्यादा स्वीकार्य बनाएगा? इन सवालों के जवाब अगले कुछ दिनों और हफ्तों में मिलेंगे, लेकिन इतना तय है कि बीजेपी अब ज्यादा आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेगी जबकि विपक्षी गठबंधन को अपने तरकश के लिए नए तीर खोजने होंगे।

पानदान से नापी जाती थी इंसान की हैसियत

अवध के नवाबों को सूबे के पूर्ववर्ती राजाओं-महाराजाओं से विरासत में अनेक परंपराएं मिलीं। उनमें से एक यह भी थी कि कोई गंभीर चुनौती सामने आ खड़ी हो तो जिन रणबांकुरों या सिपहसालारों को उससे निपटने में काबिल माना जाए, उनके सामने पान का बीड़ा रखकर पूछा जाए कि उनमें से कौन उसे उठाएगा? असल में यह चुनौती का बीड़ा होता था। फिर जो भी उसे उठाए, चुनौती को उसकी आन से जोड़ दिया जाए, ताकि वह उससे निपटने में जी-जान लगा दे।

क्या पता नवाबों ने इस परंपरा की बेकद्री की या चाहकर भी उसे बचा नहीं पाए, लेकिन उनके दौर में पान के ऐसे बीड़े महज कहावतों में रह गए। अलबत्ता, पान की सुर्खी के आकर्षण ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। यहां तक कि एक शायर ने तो उसे कयामतखेज तक बता डाला, 'कयामतखेज है सुर्खी ये पानों की लब-ए-तर में, खुदा जाने ये दोनों लाल हैं किसके मुकद्दर में।'

इतना ही नहीं, जो पानदान दूसरे शहरों में पान रखने के डिब्बे या पिटारियां भर हुआ करते थे, अवधवासियों की जीवनशैली और तहजीब का अंग तो बने ही, हुनर के प्रदर्शन का जरिया भी बन गए। पानदानों के साथ डली या सुपारी

काटने के लिए जो सरौते हुआ करते थे, वे भी किसी कलाकृति से कम नहीं ही रह गए। आगे चलकर ये दोनों लोहे, जस्ते या तांबे जैसी सस्ती और सोने-चांदी जैसी बेशकीमती धातुओं से बनने लगे, साथ ही अपनी कम या ज्यादा कीमत के मुताबिक अपने मालिक की माली हैसियत भी बताने लगे।

जितने नफासती ये पानदान बाहर से होते थे, इनके अंदर उतनी ही नफासत से पान रखने की छोटी-बड़ी जगहें बनी होती थीं। बड़े खानों को कुल्हियां कहा जाता और उनमें कत्था और चूना रखा जाता जबकि डिब्बियां कहलाने वाले छोटे खानों में डली (सुपारी), जर्दा और पान का जायका बदलने वाली दूसरी चीजें। कुल्हियों के ढक्कन कसे होते थे, जबकि डिब्बियों के ढक्कन बस उन पर रखे भर होते थे। कई पानदानों के बीच में लौंग और इलायची आदि रखने के लिए अलग इंतजाम भी होता था।

अवध के नामी इतिहासकार अब्दुल हलीम 'शरर' के मुताबिक पहले दिल्ली में गोल, वर्गाकार या अठपहलू पिटारियों जैसे पानदान हुआ करते थे। बाद में हैदराबादियों ने भी उन्हें जस का तस अपना लिया था। लेकिन लखनवियों ने उन्हें अपनी रुचि और रहन-सहन के मुताबिक काट-छांटकर उनका नक्शा बदलकर ही अपनाया। और तो और, उनकी शक्ल कलशों जैसी बना दीं, उनकी चोटी पर कड़ा भी लगा दिया ताकि उन्हें लाने-ले जाने में दिक्कत न हो।

वक्त बदला तो ऐसे अनेक पानदान बेकद्री के चलते घरों के कोनों में धूल फांकने लगे, लेकिन उससे पहले उनमें पान और उसके सामानों के अलावा रातरानी भी रखी जाती थी। निकाह के बाद बीवियां अपने मायके से पानदान लेकर ससुराल आती थीं और निकाहनामों में दर्ज किया जाता था कि उनके मियां उनको कितना 'खर्चा-ए-पानदान' देंगे। शुरू में पानदान मुसलमानों के घरों की ही शोभा थे, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने सारी धार्मिक बाड़बंदियां फलांगकर हिंदुओं के घरों में भी जगह बना ली।

पान के शौकीनों का महज पानदान से काम नहीं चला तो खासदान और उगालदान का भी 'आविष्कार' हुआ। खासदान कलात्मक ढक्कन वाली ट्रे जैसा होता था, जिसमें पान के बीड़े या गिलौरियां सलीके से रखी और परोसी जाती थीं। लखनऊ के कलाकार इस ट्रे को लासानी बनाने में भी कुछ कम हुनरमंदी नहीं दिखाते थे।

लेकिन जाने क्यों, उन्होंने पान खाने वालों की पीक थूकने की जरूरत पूरी करने के लिए कलात्मक पीकदान बनाने में कतई रुचि नहीं ली। इसीलिए 'गुजिश्ता लखनऊ' में 'शरर' ने यह तो बहुत शान से बताया है कि तब पानदान और खासदान बैठकों, सभाओं और समागमों का जरूरी हिस्सा थे, लेकिन पीकदानों की ईजाद या तरक्की में लखनऊ के किसी भी तरह के योगदान से साफ इनकार कर दिया है।

यह लिखकर कि पीकदान शायद दिल्ली में ईजाद हुए और जस के तस लखनऊ चले आए। आखिर पीकों से फर्श के पुरतकल्लुफ कालीनों, दीवारों और पोशाकों को बचाने के लिए लखनवियों को भी उनकी जरूरत पड़ती ही थी।

मार्ग-दर्शन

संवाद संभव न होने पर मौन रहना उचित

एक बहरा चरवाहा पहाड़ों पर भेड़ें चरा रहा था। दोपहर हो गई थी लेकिन उसकी पत्नी अभी तक भोजन लेकर नहीं आई थी। जब भूख असहनीय हो गई तो वह अपने स्थान से थोड़ा नीचे उतरा कि तभी उसे एक लकड़हारा पेड़ पर बैठा दिखाई दिया। चरवाहे ने नीचे से ही कहा, 'जरा मेरी भेड़ों का ख्याल रखना भाई, मैं घर जा रहा हूं खाना लेने।' लकड़हारा भी बहरा था। उसने कहा, 'जा-जा, मेरे पास बातचीत का समय नहीं है।' चरवाहे को लकड़हारे के हाव-भाव देखकर लगा कि उसने उसकी बात मान ली है। वह घर गया और रोटी लेकर तत्काल वापस लौट आया। आकर उसने भेड़ों की गिनती की। गिनती पूरी निकली। चरवाहे ने सोचा कि लकड़हारे ने उसकी भेड़ों की अच्छी देखभाल की है। उसे भी बदले में कुछ अच्छा करना चाहिए। यह सोचकर उसने भेड़ों के समूह में से एक लंगड़ी भेड़ को निकाला और उस लकड़हारे को भेंट देने के लिए चला। चरवाहे को लंगड़ी भेड़ के साथ आता देख लकड़हारे को लगा कि यह पूछने आया है कि मेरी भेड़ लंगड़ी कैसे हुई? उसने गुस्से से कहा- क्या मतलब? मैंने तेरी भेड़ लंगड़ी थोड़े ही की है। विवाद बढ़ने लगा। दोनों एक-दूसरे की बात सुन नहीं सकते थे। एक कह रहा था- मैंने तेरी भेड़ देखी ही नहीं? दूसरा कह रहा था- इसे ले लो। एक फकीर वहां से गुजर रहा था। उसे दोनों ने पकड़ लिया। उसने मौन की प्रतिज्ञा ले रखी थी, सो उसने दोनों को घूरकर देखा। लकड़हारा और चरवाहा फकीर से भयभीत हो भाग गए। कुल मिलाकर कोई किसी को अपना पक्ष न समझा पाया। यह प्रतीकात्मक कथा संकेत करती है कि जहां संवाद संभव न हो, वहां अपने रास्ते पर निकलने में ही समझदारी है। वैसे संवादहीनता कदापि उचित नहीं है, किंतु जहां समझ का योग्य स्तर न हो, वहां संवाद कायम करने की बजाय मौन रहकर कार्य करना ही श्रेयस्कर है।

जीने की राह

सार्थक जीवन में उद्देश्य का महत्व

सुख-शांति प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य को महत्व देना होगा। बिना उद्देश्य के जीवन की स्थिति अधूरी रह जाती है। उद्देश्यविहीन जीवन वैसा ही है, जैसे बिना पतवार के नाव, जो लहरों में भटक रही है। इधर से लहर आती है, नाव को उधर धकेल देती है और जोर का उछाल आता है तो नाव डूब भी जाती है। इस दुनिया में आदमी पैदा होता है। खाता-पीता है। मौज उड़ाता है। पढ़तालि खता है। जवान होने पर माता-पिता शादी कर देते हैं। वह अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए कोई धंधा या नौकरी करता है। किसी की मौत पर दुखी होता है। खुशी के अवसर पर प्रसन्न होता है। बीमार होता है। कष्ट उठाता है। बूढ़ा होता है और आखिरकार मर जाता है। बस, यही मनुष्य का जीवन है। किसी दोस्त से राह चलते हुए जरा पूछ लें कि भाई साहब, क्या हाल-चाल है, कैसा जीवन चल रहा है? दूसरी ओर से टूटे हुए मन से निराशा भरे शब्दों में जवाब मिलता है- बस, जीवन की गाड़ी किसी तरह चल रही है। जो गुजर जाए, वही अच्छा है। मनुष्य का जीवन यूं ही व्यतीत करने के लिए नहीं होता। यह तो कुछ करने के लिए है। हमारे कदम उत्साहित होने चाहिए। अपने जीवन के प्रति गहरा लगाव होना चाहिए। निस्संदेह जीवन के इस सफर में तकलीफें, कठिनाइयां आएंगी, परंतु हमें इन सब पर विजय हासिल करनी है और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना है। कठिनाइयों, तकलीफों के मध्य जब आपका एक कदम भी आगे बढ़ेगा, उसमें आपको बेहद आनंद महसूस होगा। किसी भी महान लक्ष्य की पूर्ति बिना कष्ट और कठिनाई के हो जाना सच्चे सुख का कारण नहीं बन सकता और इसका ज्यादा मोल भी नहीं रह जाता। कष्टों को सहकर कड़े परिश्रम से अर्जित सफलता ही व्यक्ति को संतोष प्रदान करती है।

दैनिक पंचांग

10 दिसम्बर 2023 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	वृश्चिक में	धनु	07.03 बजे से
चंद्र	तुला में	मकर	09.08 बजे से
मंगल	वृश्चिक में	कुंभ	10.55 बजे से
बुध	धनु में	मीन	12.28 बजे से
गुरु	मेष में	मेष	13.58 बजे से
शुक्र	तुला में	वृष	15.38 बजे से
शनि	कुंभ में	मिथुन	17.36 बजे से
राहु	मीन में	कर्क	19.50 बजे से
केतु	कन्या में	सिंह	22.06 बजे से
राहुकाल 4.30 से 6.00 बजे तक		कन्या	00.18 बजे से
		तुला	02.28 बजे से
		वृश्चिक	04.43 ब.से

रविवार 2023 वर्ष का 344 वां दिन
दिशाशूल पश्चिम **ऋतु** हेमन्त।
विक्रम संवत् 2080 **शक संवत्** 1945
मास मृगशीर्ष (दक्षिण भारत में कार्तिक) **पक्ष** कृष्ण
तिथि द्वादशी 07.14 बजे को समाप्त।
नक्षत्र स्वाती 11.50 बजे को समाप्त।
योग अतिगण्ड 22.34 बजे को समाप्त।
करण तैतिल 07.14 बजे तदनन्तर गर 19.18 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 24.6 घण्टे
रवि क्रान्ति दक्षिण 22° 52'
सूर्य दक्षिणायन **कलि अहर्गण** 1871823
जूलियन दिन 2460288.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2550
हिजरी सन् 1445
महीना जमादि उलावल **तारीख** 25
विशेष प्रदोष व्रत, शहीद वीर नारायण सिंह बलिदान दिवस।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
उद्वेग	05.56 से	07.23 बजे तक	शुभ	05.36 से	07.09 बजे तक
चर	07.23 से	08.51 बजे तक	अमृत	07.09 से	08.41 बजे तक
लाभ	08.51 से	10.18 बजे तक	चर	08.41 से	10.14 बजे तक
अमृत	10.18 से	11.46 बजे तक	रोग	10.14 से	11.46 बजे तक
काल	11.46 से	01.14 बजे तक	काल	11.46 से	01.19 बजे तक
शुभ	01.14 से	02.41 बजे तक	लाभ	01.19 से	02.51 बजे तक
रोग	02.41 से	04.09 बजे तक	उद्वेग	02.51 से	04.24 बजे तक
उद्वेग	04.09 से	05.36 बजे तक	शुभ	04.24 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

आपका राशिफल 10 दिसम्बर

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): कामकाज की व्यस्तता से सुख-चैन प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। लाभमार्ग प्रशस्त होगा। नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होगी। आनन्ददायक वातावरण बनेगा। शुभांक-3-6-8

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। शुभांक-1-3-5

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें, शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। खान-पान में सावधानी रखें। नौकरी में अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। शुभांक-2-4-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सबेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। शुभांक-1-5-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। शुभांक-3-6-8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होगें। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। अच्छे समय इन्तजार करें। कर्म प्रधान विचार धारा बनाये रखें। शुभांक-6-7-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ होगा और पुराने मित्रों से समागम भी होगा। दैनिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। शुभांक-5-7-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बना रहेगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर बना रहेगा। शुभांक-2-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। शुभांक-3-6-8

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास सफल होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। शुभांक-4-6-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): आलसी न बनें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। शुभांक-3-5-6

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंग। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-5-6-8

प्रसंगतः संकल्प की ताकत

एक बालक परीक्षा में फेल हो गया। उसके साथियों ने इस पर उसका खूब मजाक उड़ाया। इससे उस लड़के को गहरा सदमा पहुंचा। उसके बाद से वह अत्यंत तनावग्रस्त रहने लगा। उसने पढ़ना-लिखना और यहां तक कि ढंग से खाना-पीना भी छोड़ दिया। वह हर समय एक कोने में गुमसुम बैठा रहता। बालक के माता-पिता ने उसे प्यार से समझाया, 'बेटा, एक बार फेल होना इतनी बड़ी असफलता नहीं है जिससे तुम इस तरह परेशान हो जाओ। आखिर ऐसा कब तक चलेगा। जो हुआ उसे भूल जाओ और आगे की सोचो।' किंतु बालक को माता-पिता की बातों से संतुष्टि नहीं मिली। मानसिक अशांति और निराशा में उसे कुछ नहीं सूझा और वह एक रात आत्महत्या करने के लिए चल पड़ा। रास्ते में एक बौद्ध मठ मिला जहां से कुछ आवाजें आ रही थीं। बालक उत्सुकतावश उन आवाजों को सुनने के लिए मठ के अंदर चला गया। वहां उसने देखा कि एक भिक्षुक कह रहा था, 'पानी मैला क्यों नहीं होता, क्योंकि वह बहता रहता है। पानी के मार्ग में बाधाएं क्यों नहीं आतीं? क्योंकि वह बहता रहता है। पानी का एक बिंदु झरने से नदी, नदी से महानदी और महानदी से समुद क्यों बन जाता है? क्योंकि वह बहता रहता है। इसलिए मेरे जीवन! तुम रुको मत, बहते रहो। जीवन में कुछ असफलताएं आती हैं लेकिन तुम उनसे घ

इठलाती जुल्फों के पोनीटेल हेयरस्टाइल

लंबे और मीडियम लेंथ बाल कूल और स्टाइलिश नजर आएँ, इसके लिए अब मजेदार पोनीटेल हेयरस्टाइल ट्राय करें। चाहे ट्रेडिशनल वियर हो या वेस्टर्न वियर, पोनीटेल हेयरस्टाइल सब पर फबेगी। इस हेयरस्टाइल की खास बात यह है कि आपके बाल सिल्की, वेवी या कर्ली होने परभी आप इसे आसानी से और कम समय में बना सकती हैं। पोनीटेल हेयरस्टाइल ऑफिस जाने के लिहाज से सिंपल और सुविधाजनक तो है ही और यदि आप किसी पार्टी में जाने के लिए तैयार हो रही हैं तो थोड़ क्रिएटिव ढंग से इसे बनाएँ, आप इसमें खूबसूरत नजर आएँगी। इस सीजन में सेलिब्रिटिज में भी पोनीटेल का क्रेज देखा जा रहा है।

कर्ली साइड पोनीटेल

पोनीटेल की तमाम स्टाइलों में कर्ली साइड पोनीटेल युवतियों में विशेष लोकप्रिय है। कर्ली साइड पोनीटेल जींस-टॉप और सलवार-कमीज दोनों के ही साथ बढ़िया लुक देती है। ध्यान रहे इसे बनाने के लिए आपके बाल कर्ल किए हों। कर्ली साइड पोनीटेल के बनाने के लिए बालों को साइड में लेते हुए ऊपर की ओर से रबर बैंड से बाँध दें। हाँ, बालों में जेल लगाना या हेयर स्प्रे करना ना भूलें, क्योंकि यह पोनीटेल स्लीक लुक में ज्यादा अच्छी लगती है।

रोप ब्रेड पोनीटेल

अपने नाम के मुताबिक यह पोनीटेल बिलकुल रस्सीनुमा चोटी की तरह ही लुक देती है। यदि आपको क्लासिक लुक पसंद है तो आपको पोनीटेल का यह स्टाइल पसंद आएगा। रोप ब्रेड पोनीटेल बनाने में बहुत ही आसान है और इसे बनाने में समय भी बहुत कम लगेगा। पहले अच्छी तरह बाल सुलझा लें और एक रबर बैंड ऊपर की ओर लगाएँ। अब बालों को दो भागों में कर दोनों भागों को ट्विस्ट करें। अब इन ट्विस्ट किए गए भागों को एक-दूसरे पर ऊपर से नीचे तक ट्विस्ट करें और नीचे भी एक रबर बैंड लगा दें। लीजिए तैयार है आपकी रस्सीनुमा चोटी वाली पोनीटेल।

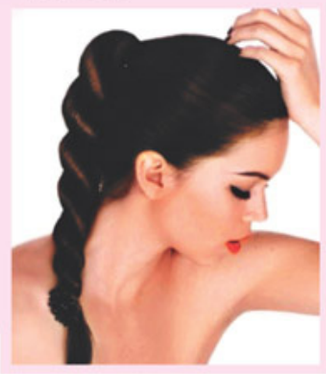

फ्रिजी लो पोनीटेल

फ्रिजी लो पोनीटेल सेलिब्रिटिज की पसंदीदा हेयरस्टाइल में से एक है। यह हेयरस्टाइल तब भी बनाई जा सकती है, जबकि आपके बाल शैंपू ना किए हो। फ्रिजी लो पोनीटेल बनाने के लिए बालों में जेल जरूर लगाएँ। जेल लगाने के बाद बालों को रबरबैंड से बाँध दें।

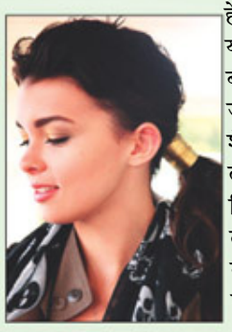

पिन-अप पोनीटेल

कपड़ों से लेकर एक्सेसरीज तक में इन दिनों रेट्रो लुक पसंद किया जा रहा है। यही वजह है कि हेयरस्टाइल के मामले में भी रेट्रो फैशन पसंद किया जा रहा है। बैक कॉम्बिंग करते हुए बालों का सामने की ओर पफ बनाएँ। फिर बालों की ऊँची पोनीटेल बना लें। इस हेयरस्टाइल के साथ स्कार्फ या बो भी लगा सकती हैं।

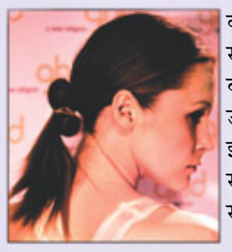

प्रिंसेज पोनीटेल

इवनिंग पार्टी के लिए प्रिंसेज पोनीटेल बनाएँ। यह बनाने में आसान होने के साथ ही आपको पार्टी के लिए परफेक्ट लुक भी देगी। पूरे बालों की ऊँची पोनीटेल बना लें। अब पोनीटेल में स्पायरल कर्ल दें। रबर को छुपाने के लिए ऊपर की ओर कोई अच्छा-सा बो जरूर लगाएँ।

नॉटेड पोनीटेल

यदि आप कुछ क्रिएटिव लुक चाहती हैं तो नॉटेड पोनीटेल बढ़िया विकल्प है। लंबे बालों में स्टाइलिश लुक के यह एक बेहतर चुनाव रहेगा। इसे बनाने के लिए पहले सिंपल पोनीटेल बनाकर उसे ऊपर की ओर ट्विस्ट करते हुए बैंड से बाँध दें। बैंड इस तरह लगाएँ कि बाँधने के बाद शेष बाल लंबाई में नीचे की ओर आ जाएँ। यदि आपके बाल बहुत भारी या सिल्की हैं तो बॉबी पिन का इस्तेमाल करें।

पंडोली

सामग्री -

2 कप मूँग की छिल्के वाली दाल, 1 छोटा चम्मच हरी मिर्च, अदरक का पेस्ट, 1 चुटकी मीठा सोडा, 1/2 चम्मच राई, सरसों, जीरा, 1 चुटकी हींग, 1 बड़ा चम्मच तेल, नमक स्वादानुसार, धनिया पत्ती अंदाज से।

विधि-

दाल में हरी मिर्च, अदरक का पेस्ट, सोडा व नमक डालकर मिक्सर में पीस लें। एक पैन में तेल गरम करके राई, सरसों, जीरा, हींग का तड़का लगाकर पिसी हुई सामग्री डालकर अच्छी तरह मिलाकर उतार लें। इसके बाद इडली स्टैंड में तेल लगाकर पेस्ट डालें और 15-20 मिनट स्टीम करके निकालें। तैयार पंडोली को सर्विस डिश में निकालकर ऊपर से धनिया पत्ती डालकर चटनी के साथ गरम-गरम सर्व करें।

बचाव

✿ अपने चेहरे को कड़े हाथों से न रगड़ें। दिन में सिर्फदो बार हल्के क्लींजर से चेहरा साफकरें। चेहरा धोने से चेहरे की मृत कोशिकाएँ, उनमें मौजूद ऑयल और धूल मिट्टी साफहो जाती है। लेकिन चेहरे को बार-बार धोने से त्वचा में रुखापन आ जाता है।

✿ चेहरे को साफकरने के लिए स्क्रवर का इस्तेमाल न करें। माजार में मिलने वाले टोनर में एल्कोहल की मात्रा ज्यादा होती है। चेहरे पर ज्यादा क्रीम लगाना, दवाई लगाना समस्या को और गंभीर बना सकता है।

✿ जिन चीजों को खाने से मुँहासे बढ़ सकते हैं उन्हें न खाएँ। आयोडीन युक्त खाद्य पदार्थ और ज्यादा तली हुई चीज मुँहासों को बढ़ाती हैं।

✿ चेहरे पर ऐसे कॉस्मेटिक्स का इस्तेमाल करें जो रोमछिद्रों को बंद न करें। जो ऑयल फ्री हों, सुगंधरहित कॉस्मेटिक्स का इस्तेमाल करें।

✿ एक्सरसाइज करने के दौरान चेहरे पर कोई मेकअप न लगाए, क्योंकि एक्सरसाइज करने के दौरान पसीने से चेहरे के रोमछिद्र बंद हो सकते है।

✿वर्क आउट के द्वारा अपने लाइफस्टाइल को बढ़िया बना सकते है, ज्यादा कड़ी एक्सरसाइज करने के कारण शरीर में त्वचा की तेल ग्रंथियों से अतिरिक्त तेल का स्राव होता है। ज्यादा गर्मी, कठिन एक्सरसाइज और शारीरिक गतिविधि के कारण माथे, छाती और पीठ में मुँहासे बढ़ सकते है। हमेशा सूती कपड़े पहने। जो लोग मुँहासों की समस्या से परेशान रहते है उनके लिए स्वीमिंग एक अच्छा वर्कआउट है।

कई कारणों से होता है पीलिया

त्वचा और आँखों का पीला पड़ना गंभीर समस्या के लक्षण हैं।-पीलिया में त्वचा का रंग बदलकर पीला हो जाता है। यह बदलाव सबसे ज़्यादा आँखों में दिखाई देता है, आँखों का सफेद हिस्सा पीला पड़ जाता है। लिवर में बिलिरुबिन नामक पिगमेंट के शरीर में एकट्ठा होने से यह पीलापन दिखाई देने लगता है। सामान्य स्थिति में यह लिवर में बनने वाले बाइल के साथ आँत में पहुँचता है-और मल के ज़रिए शरीर से बाहर निकल जाता है। रक्त में बिलिरुबिन पिगमेंट-का स्तर बढ़ने पर या इसका निकास बाधित होने पर यह पीले रंग का पिगमेंट शरीर में इकट्ठा होने लगता है, जिससे पीलिया हो जाता है। वयस्क या अधेड़ावस्था में पीलिया लिवर के क्षतिग्रस्त होने जैसी किसी गंभीर समस्या का संकेत भी हो सकता है।

पीलिया की पुष्टि साधारण ब्लड टेस्ट-द्वारा की जा सकती है। पीलिया का मुख्य लक्षण त्वचा और आँखों का पीला पड़ना है, पीलापन नाखूनों में भी देखा जा सकता है। सिर और चेहरे से शुरू होकर यह शरीर में नीचे की ओर भी फैलने लगता है। त्वचा में खुजली भी हो सकती है।-छोटे बच्चों को गंभीर पीलिया यानी रक्त में बिलिरुबिन का स्तर बहुत ज़्यादा होने पर मस्तिष्क में क्षति होने लगती है। इससे उनकी भूख कम हो जाती है-और उनींदापन बना रहता है। पीलिया विभिन्ना कारणों से हो सकता है। मरीज़ में पीलिया के अलावा कुछ अन्य लक्षण भी दिखाई-देते हैं, जिनसे पीलिया के कारण का पता लगाया जा सकता है। लाल रक्त कोशिकाओं के टूटने की सामान्य प्रक्रिया में बिलिरुबिन का निर्माण होता है। यदि ये कोशिकाएँ असामान्य रूप से टूटने लगे तो इससे बिलिरुबिन का स्तर बढ़ने लगता है, जिससे पीलिया हो जाता है।-ऐसी स्थिति में मरीज़ में पीलिया के लक्षणों के अलावा रक्तअल्पता के लक्षण (थकान, कमज़ोरी आदि) भी दिखाई-देते हैं।

कारण और जोखिम...

पीलिया विभिन्ना कारणों से हो सकता है।-लाल रक्त कोशिकाओं के अधिक मात्रा में टूटने पर यह हो सकता है। लिवर का ठीक से काम न करना एक कारण हो सकता है। लाल रक्त कोशिकाओं का अपने जीनकाल से पहले टूटना भी एक कारण हो सकता है। इन सभी कारणों से रक्त में बिलिरुबिन का स्तर बढ़ जाता है।-वयस्कों में पीलिया अक्सर लिवर के ठीक से काम न करने का संकेत होता है। हिपेटाइटिस जैसे संक्रमण या कुछ विशेष दवाँए लिवर को प्रभावित करती हैं। शराब के कारण भी लिवर की कोशिकाएँ क्षतिग्रस्त होने की समस्या न हो तो इसका निकास न होने से पीलिया हो सकता है। यदि बाइल किसी अवरोध के कारण लिवर में ही इकठ्ठा होने लगे तो बिलिरूबिन रक्त में इकठ्ठा होने लगता है और यह पीलिया का कारण बनता है।

उपचार...

पीलिया का इलाज इसके कारण पर निर्भर करता है। शिशुओं को होने वाला पीलिया अपने आप ठीक हो जाता है। उपचार में लाइटथेरेपि या फोटेथेरेपि दी जा सकती है, जिससे शरीर में इकठ्ठा बिलिरूबिन पिगमेंट टूटकर कम हानिकारक रूप में बदल जाता है। बिलिरूबिन का स्तर घातक स्तर तक बढने पर ब्लड ट्रांसफ्यूडजन की स्थिति बन सकती है। वयस्कों में इसका कारण जानना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

नवजात में पीलिया...

नवजात शिशुओं में पीलिया आम है, 60 प्रतिशत से ज्यादा इससे प्रभावित होते हैं। जन्म के कुछ दिनों बाद शिशुओं में यह समस्या दिखाई देती है। कई बार शिशुओं के शरीर में जन्म के तुरंत बाद बिलिरूबिन की प्रोसेसिंग सामान्य से धीमी होती है, जिससे वे पीलियाग्रस्त हो जाते हैं।

हेल्थ प्लस

तंबाकू और कैंसर...

तंबाकू में साढे चार हजार से अधिक हानिकारक रसायन होते हैं। इनमें से 18 रसायन कैंसरकारक माने जाते हैं। धूम्रपान करने वाले सबसे अधिक फेफड़े और गले के कैंसर से पीड़ित होते हैं। हमारे देश में तंबाकू पान और गुटखे के साथ खाई जाती है इस कारण मुँह के कैंसर के मामले दुनिया में सबसे अधिक हैं। तंबाकू 400 साल पहले पुर्तगानियों के साथ गुजरात के तट पर पहुँची थी। आज भी तंबाकू की सबसे अधिक खेती गुजरात में ही होती है। ग्रामीण इलाकों में बीड़ी का चलन अधिक है। बीड़ी के कारण पैरों की सुन्नता (बर्जर्स डिसीज) की शिकायत होती है। इसमें कई मरीजों के पैर काटने की नौबत आ जाती है, क्योंकि पैरों को रक्त पहुँचाने वाली नलिकाएँ सिकुड़ जाती हैं। बीड़ी निर्माण में बच्चों का बहुतायत से इस्तेमाल होता है, क्योंकि उनकी नाजुक उँगलियों से बीड़ी का निर्माण शीघ्रता से हो पाता है। इस तरह बीड़ी निर्माण के साथ-साथ इसका उपयोग करने वाले दोनों ही तंबाकू के घातक शिकार हो जाते हैं।

ऑटिज्म...

ऑटिज्म एक अवस्था है, जिसमें मस्तिष्क का विकास प्रभावित होता है। इस समस्या से ग्रसित बच्चा अपने वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता। यह मूल रूप से संवाद स्थापित नहीं करने की वजह से होता है। इससे बच्चा अपने आसपास मौजूद वस्तुओं और लोगों के साथ अर्थपूर्ण संवाद स्थापित करने में असमर्थ रहता है। वह अभिव्यक्ति के लिए एक ही तरह के शब्दों को दोहराता है-और एक जैसा व्यवहार ही करता है।

को विकसित नहीं कर पाता। इस प्रकार आत्मनिर्भर न बन पाने की वजह से वह अपने दैनिक कार्यों के लिए दूसरों पर आश्रित रहता है।

ऑटिज्म ग्रसित बच्चे

ऑटिज्म ग्रसित बच्चे आई कॉन्टेक्ट नहीं कर पाते। वे न तो लोगों की ओर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं, न ही मुस्कराते हैं और न ही आवाज के प्रति कोई प्रतिक्रिया देते हैं। उम्र के साथ बढने पर भी ये बच्चे सामाजिक समझ को प्रदर्शित नहीं करते जैसे-हँसने, डाँटने, डराने एवं नाम पुकारे जाने पर कोई अर्थपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं दे पाते हैं। बातचीत न कर पाने के कारण उम्र बढ़ने के साथ इन बच्चों के शब्दकोश में वृद्धि नहीं हो पाती। वे अपनी भावनाओं को उचित शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप एक ही प्रकार के शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। ये बच्चे एकाग्रचित्त भी नहीं हो पाते, अत: शैक्षणिक विकास अवरूद्ध होता है।

कारण...

दिमाग द्वारा सूचनाओं को प्रोसेस करने की प्रक्रिया ऑटिज्म के कारण प्रभावित होती है। तंत्रिकाएँ आपस में जुड़कर मस्तिष्क तक जानकारी को पहुँचाते हैं। ऑटिज्म में इस प्रक्रिया में परिवर्तन आ जाता है। इसका सटीक कारण फिलहाल अज्ञात है। जीन्स में होने वाले परिवर्तन संभावित कारणों में शामिल हैं। ऑटिज्म का एक मजबूत आनुवांशिक आधार होता है। ऐसा नहीं है कि इन बच्चों का दिमाग काम ही नहीं करता। ऑटिज्म ग्रसित बच्चों का दिमाग अलग तरह से काम करता है। इनके दिमाग का कुछ-हिस्सा सामान्य से भी अधिक कार्य-करता है। इसीलिए ये असाधारण रूप से चीजों को ध्यान में रख सकते हैं और पूरी बारीकी के साथ ड्रॉइंग भी बना लेते हैं। कई-लोग ऐसे बच्चों को मंदबुद्धि समझ लेते हैं। मंदबुद्धि एवं ऑटिस्टिक बच्चों के बीच का अंतर लक्षणों को समझने से स्पष्ट हो सकता है। ऑटिज्म ग्रस्त बच्चों में तीन साल की उम्र के पहले ही लक्षण दिखाई-देने लगते हैं। इन बच्चों का विकास शुरुआत में सामान्य बच्चों की तरह ही होता है, लेकिन धीरे-धीरे ऑटिज्म के लक्षण विकसित होने लगते हैं।

कई-लोग ऐसे बच्चों को मंदबुद्धि समझ लेते हैं। मंदबुद्धि एवं ऑटिस्टिक बच्चों के बीच का अंतर लक्षणों को समझने से स्पष्ट हो सकता है। ऑटिज्म ग्रस्त बच्चों में तीन साल की उम्र के पहले ही लक्षण दिखाई-देने लगते हैं। इन बच्चों का विकास शुरुआत में सामान्य बच्चों की तरह ही होता है, लेकिन धीरे-धीरे ऑटिज्म के लक्षण विकसित होने लगते हैं।

ऑटिज्म ग्रसित बच्चों के लक्षण

इससे ग्रस्त बच्चे संप्रेषण या संवाद स्थापित नहीं कर पाते।

वह एक ही प्रकार की अर्थहीन शारीरिक क्रिया बार-बार दोहराते हैं, जैसे डिब्बों को एक के ऊपर एक रखकर जमाते रहना।-

परिणामस्वरूप बच्चा सामान्य जीवन जीने के लिए आवश्यक सामाजिक व्यवहार एवं वार्तालाप के कौशल

इलाज...

चूँकि ऑटिज्म का कारण अस्पष्ट-है,-इसलिए इसका इलाज या बचाव भी नहीं है। ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे का जीवन सरल बनाने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं।-यदि बच्चे में इसका शुरुआत में ही पता चल जाए और तभी से विशेष ध्यान दिया जाए तो उसकी हालत में कुछ सुधार हो सकता है।-हालाँकि यह सब एक हद तक ही मददगार होते हैं, स्थिति के प्रबंधन के लिए प्रोफेशनल्स की मदद ली जा सकती है। शिक्षण की विशेष पद्धति, संवाद, भाषा और व्यवहार से जुड़ी समस्याओं के लिए विशेष देखभाल ज़रूरी है।-ऑटिज्म के लक्षणों में अवसाद या दौरे भी शामिल हो सकते हैं, इन लक्षणों के लिए दवाएँ दी जा सकती हैं। हालाँकि इस बीमारी का कोई-इलाज नहीं है, लेकिन कुछ-बच्चे बड़े होने पर ठीक भी हुए हैं। इससे प्रभावित अधिकतर बच्चे वयस्क होने के बाद भी दूसरों पर निर्भर रहते हैं। कम ही आत्मनिर्भर होने में सफल हो पाते हैं।